आर.एन.आई.पंजीयन क्रं.
CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 5 अंक 1, जनवरी 2021

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म.नं. 580/1, गली नं.17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर (छ.ग.) 492007
ई-मेल : wings2flysociety@gmail.com

मूल्य 80/-

अनुक्रमाणिका

नया वर्ष नव प्रभात लाएगा 5

बगिया 7

किसान का हल 8

पंचतंत्र की कथाएँ- तीन मछलियाँ 9

शानदार बचपन 12

जड़काला 14

साँझ 15

हमारे प्रेरणास्रोत- स्वामी विवेकानंद 16

कपड़े 18

सर्दी में है उलझन 20

मान ल पाथे 21

कहती मुझसे मेरी नानी 23

हमारे पौराणिक पात्र- वराहमिहिर 25

नारी 29

किसान 30

तुम जरा सा सीधे बनना 32

मैं भारत की माटी हुँ 34

स्कूल के दिन 37

क्रिसमस-डे 40

गन्ना पूजा 42

शुभी का शंख 43

उर उमंग भरता निर्झर 45

काजल के जूते 47

Christmas festival 48

गौरैया 50

किसी के साथ बुरा मत करो 52

जब शहर हमारा सोता है 53
आया पढ़ना- लिखना अभियान 55
बढ़ता नशा 57
नटखट नन्ही 58
नन्ही चिड़िया 60
करौ पढ़ाई 62
अधूरी कहानी पूरी करो 63
वह गांव वाला आदमी... 63
संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गयी कहानी 65
टेकराम धुव' दिनेश' द्वारा पूरी की गयी कहानी 66
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 67
मोहन की मुश्किल 67
प्यारी नानी 68
मानवाधिकार का आधार है संवेदना एवं समताभरा व्यवहार 69
मान बढ़ाता छत्तीसगढ़ का शिमला 72
पहेलियाँ 74
जिंदगी 76
ड्यूटी 78
सर्दी आई 80
नए साल में 82
बेंदरा 83
पछतावा 84
नए साल में 85
अपलम चपलम 86
नया इतिहास बनाओ 88
सत्यवादिता 89
लाल टमाटर 91

नवा बछर 92
मामा चंदा 93
सफलता की कहानी- व्यवहार में परिवर्तन 94
पोखर में हरा सिंघाड़ा 95
जानी मानी मूली 96
शरद ऋतु 98
घर 99
तितली 100
फूला केला 101
किसान की कहानी 102
भूल का एहसास 103
मोबाइल 105
उलटे लटके पंखे जी 108
श्रीनिवास रामानुजन: गणित का दैदीप्यमान नक्षत्र 109
आओ हम पेड़ लगाएं 113
माँ 115
संभल जा बंदे 116
चित्र देख कर कहानी लिखो 118
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी 119
शैक्षिक भ्रमण 119
यशवंत कुमार चौधरी द्वारा भेजी गई कहानी 120
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 121
ठंड 122
मोबाइल से पढ़ाई 123
भाखा जनऊला 124

संपादक

डॉ. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, द्रोण साहू, डॉ. शिप्रा बेग, वृंदा पंचभाई, रीता मंडल, शशि शर्मा, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका

पुनीत मंगल

आवरण पृष्ठ

हेमंत साहू

प्यारे बच्चो,

हम सभी ने सावधान रहकर और सुरक्षा के उपाय अपनाकर कोरोना वायरस के संक्रमण को नियंत्रित किया है और शिक्षा रुपी वैक्सीन को आपके द्वार तक पहुँचाने की भरसक कोशिश की है.

नववर्ष पर आप सभी को ढेर सारी शुभकामनाएँ! सभी स्वस्थ रहें, पढ़ें और आगे बढ़ें, नए वर्ष में अपने जीवन में आगे बढ़ने और अच्छे कार्य करने के लिए चलिए मिलकर कुछ संकल्प लें और उन्हें दृढ़ निश्चय के साथ समय पर पूरा करने का प्रयास करें, इसे हम अंग्रेजी में “new year resolution” कहते हैं, और हाँ बच्चों, आपमें से जिनकी किलोल की वार्षिक चंदे की अवधि समाप्त हो रही हो वे सभी नए वर्ष में पूरे वर्ष भर किलोल का आनन्द लेने हेतु पत्रिका को सबस्क्राइब अवश्य कर ले.

आपका
आलोक शुक्ला

नया वर्ष नव प्रभात लाएगा

रचनाकार- आयुष सोनी, उमरिया

नया वर्ष यह,
नई उमंगें,
नव प्रभात लाएगा.

मिटें डर के सब अँधियारे,
दर्द हो सारे दूर हमारे,
नया जोश और नई उमंगें,
छुएँगे हम नभ के तारे.

भूलेंगे हम कड़वी बातें,
बीत गईं जो दुख की रातें,
ग़म, विषाद सब भुलाकर,
सबको साथ लाएगा.

नया वर्ष यह,
नई उमंगें,
नव प्रभात लाएगा.

ग़म के बंजर बागों में फिर,
आशाओं के फूल खिलेंगे,
बिछड़े थे जो उन सालों में,
नए बरस में फिर सब मिलेंगे.

शहरों में होगी खुशहाली,
घर-घर होगी फिर दीवाली,
हर थाली में होगी रोटी,
ऐसी खुशियाँ लाएगा.

नया वर्ष यह,
नई उमंगें,
नव प्रभात लाएगा

बगिया

रचनाकार- महेन्द्र देवांगन "माटी"

फूल खिले हैं सुंदर-सुंदर, सबके मन को भाये.
मनभावन यह उपवन देखो, तितली दौड़ी आये..

सुबह-सुबह जब चली हवाएँ, खुशबू से भर जाये.
रस लेने को पागल भँवरे, फूलों पर मँडराये..

सुंदर-सुंदर फूल देखकर, मेरा भी मन ललचाता.
देख-देख उनकी सुंदरता, सबका मन हर्षाता..

कुहू-कुहू कोयल की बोली, करती मीठी बातें.
पता नहीं कब समय गुजरता, साँझ ढले घर आते..

आओ, सभी लगाएँ पौधे, सुंदर फूल खिलाएँ.
महक उठे धरती की बगिया, ऐसा कुछ कर जाएँ..

किसान का हल

रचनाकार- सोमेश देवांगन

मैं वही किसान हूँ, जिसके पास है ये अतुल्य बल.
पर मेरी समस्या का नहीं, किसी के पास कोई भी हल..

मेहनत करता हूँ दिन-रात, खेत और खलिहानों में.
बिकती क्यों मेरी फसल, दो कौड़ी के दामों में..

किसानों पर ही क्यों, होती रही आज तक राजनीति.
फिर भी किसी को शर्म न आए, देख यह अनीति..

रोटी, कपड़ा, मकान के लिए, तरस रहे ये सब किसान.
राजनीति की रोटी सेक रहे हैं, नेता बने कुछ हैवान..

ये कैसी हमदर्दी है, हम किसानों से ओ नेता भाई.
घर में टीवी देख रहे हो, ओढ़ कर कम्बल और रजाई..

भीख नही मांग रहे हैं, मांग रहे बस मेहनत की कमाई.
हम किसान एक हैं, हिन्दू-मुस्लिम या हो सिख-ईसाई..

पंचतंत्र की कथाएँ- तीन मछलियाँ

किसी नदी के किनारे उस से जुड़ा एक गहरा सरोवर था यह चारों ओर से घने वृक्षों और झाड़ियों से घिरा हुआ था, इसी कारण आसानी से लोगों की दृष्टि में नहीं आता था, उस सरोवर में अनेक जीव-जंतु सुरक्षित होकर रहते थे, सरोवर में तीन मछलियाँ साथ-साथ रहती थीं, उनके नाम थे स्वर्णरेखा, मत्स्यगंधा और रजतवर्णा.

स्वर्णरेखा सुनहरे रंग की बहुत बुद्धिमान मछली थी, किसी संकट का पूर्वानुमान होते ही अपने बचाव का उपाय कर लेती थी, मत्स्यगंधा भी बहुत चतुर थी वह किसी आपदा से नहीं डरती थी, उसे अपनी बुद्धि पर बहुत भरोसा था, उसे विश्वास था, कैसा भी संकट आए वह बच कर निकल जाएगी, रजतवर्णा इन दोनों से अलग थी, उसे लगता था, प्रकृति में सब कुछ पहले से निश्चित है जब जो होना है वह होकर ही रहेगा, कोई प्राणी कितना भी प्रयत्न करले, वह होनी को नहीं टाल सकता, विचारों में भिन्नता होते हुए भी तीनों में गहरी मित्रता थी.

एक बार कुछ मछुआरे नदी से मछलियाँ पकड़ कर अपनी बस्ती ओर लौट रहे थे, उस दिन उन्हें बहुत कम मछलियाँ मिल पाई थीं, इसलिए वे कुछ निराश थे, एकाएक उन्होंने आकाश में अनेक बगुलों को उड़ते हुए देखा जो सरोवर की ओर से आ रहे थे.

उन्होंने अनुमान लगाया जिस दिशा से वे आ रहे हैं उधर अवश्य ही कोई बड़ा जलाशय होगा तभी इतनी बड़ी संख्या में बगुले उधर गए होंगे, वे सभी उस ओर चल पड़े जिस ओर से बगुले

आ रहे थे, कुछ दूर चलने के बाद उन्हें वहाँ वह सुंदर सरोवर दिखाई पड़ा, उन्होंने देखा सरोवर के निर्मल जल में छोटी-बड़ी असंख्य मछलियाँ तैर रही हैं.

मछुआरों के मुख प्रसन्नता से खिल उठे, एक मछुआरे ने कहा, "अहा! हमारे तो भाग्य खुल गए." दूसरे ने कहा, "हाँ अब हमें कहीं और भटकने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी." तीसरे मछुआरे ने कहा, "पर भाई, अब तो सांझ ढलने को आ गई, अच्छा होगा, कलभोर में ही हम यहां आ जाएं." हां, यही उचित होगा ऐसा कहते हुए वे वहां से चले गए.

उनकी यह बातचीत इन तीनों मछलियों ने सुन ली, स्वर्णरेखा के मन में चिंता के भाव आ गए, उसने अपनी दोनों सखियों से कहा- "अच्छा हुआ जो हमें यह बात पहले ही मालूम हो गई, हम तीनों के लिए अच्छा है कि अब हम कुछ दिनों के लिए नदी के जल में चले जाएं."

यह सुनकर मत्स्यगंधा ने कहा, "तुम व्यर्थ ही चिंता करती हो, कल वे आ ही जाएंगे यह आवश्यक तो नहीं है, हो सकता है रात में तेज बारिश हो और उनकी झोपड़ियां गिर जाएं, हो सकता है उनकी बस्ती में आग लग जाए और वे सब उसमें फंस जाएं, यह भी हो सकता है कल उन्हें नदी में पर्याप्त मछलियाँ मिल जाएं, हम ऐसा मानकर क्यों चलें कि वे कल इस सरोवर में आएंगे ही, और यदि आ भी जाते हैं तो उसी समय बचने के तरीके भी ढूंढे जा सकते हैं." स्वर्ण रेखा ने कहा "जो उपाय तुम बाद में करना चाहती हो उसे पहले ही कर लेने में क्या हानि है, बुद्धिमान कहते हैं संकट आने से पूर्व ही बचाव के उपाय कर लेने चाहिये, जब आग लगे तब कुआँ खोदने से क्या लाभ?"

रजतवर्णा बोल पड़ी, "इस बातचीत का क्या अर्थ है? भविष्य में जो होना है वह तो होकर ही रहेगा, चाहे जो भी उपाय करलो."

स्वर्णरेखा ने कहा, "मैं तो यहां से जाती हूं, तुम दोनों अपनी रक्षा स्वयं करना." यह कहकर वह नदी की ओर चली गई.

दूसरे दिन बहुत से मछुआरे आए और पूरे सरोवर में उन्होंने जाल डाल दिया, मत्स्यगंधा ने सोचा अब तो कोई उपाय ढूंढना ही होगा, वह कोई गहरी और कोने की जगह ढूंढने लगी जहां जाल ना पहुंच सके पर हड़बड़ी में ऐसी कोई जगह उसे ना मिली, अचानक उसे पानी में तैरता हुआ किसी जानवर का मृत शरीर मिला, वह उसी के अंदर घुस गई.

एक मछुआरे के जाल में वह मृत शरीर भी फंस गया, जाल बाहर खींचने पर मृत शरीर के साथ मत्स्यगंधा भी बाहर आ गयी, किंतु अत्यधिक दुर्गंध के कारण मछुआरे ने उसे वापस पानी में फेंक दिया, यह एक संयोग ही था कि मछुआरे ने उसे अपनी टोकरी में नहीं डाला.

उधर रजतवर्णा भी एक दूसरे मछुआरे के जाल में फंस गई.उसे अब लग रहा था यदि उसने भी बचने का कोई प्रयत्न किया होता तो परिणाम ऐसा नहीं होता, पर अब पछताए क्या होय जब चिड़िया चुग गई खेत..., छटपटा - छटपटाकर वह अपने प्राण खो बैठी.

शानदार बचपन

रचनाकार- महेन्द्र देवांगन "माटी"

भविष्य की ना कोई चिंता,
ना भूत से कोई सरोकार था.
बचपन बड़ा ही शानदार था.
ना हँसने की कोई वजह,
ना रोने का कोई कारण.
बचपन बड़ा ही शानदार था.
चिड़ियों के गुंजनकी आहट,
चांद-तारों की झिलमिलाहट,
बचपन बड़ा ही शानदार था.
अतिथियों का आना,
मानो कोई बड़ा त्योहार था,
बचपन बड़ा ही शानदार था.
इतवार के दिन का,
रहता था इंतजार.
टीवी और सिनेमा हाल,
रहते थे गुलजार.
बचपन बड़ा ही शानदार था.

दोपहर की धूप में बाहर घूमना,
पसीने से तर-बतर होकर घर आना,
रहता था हमेशा यादगार.
बचपन बड़ा ही शानदार था.
बिजली गुल हो जाने प,
घर-आँगन में हो जाता था अंधकार,
लुका-छिपी का खेल होता था मजेदार,
बचपन बड़ा ही शानदार था.

जड़काला

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

जड़काला के दिन जब आथे
गोरसी ह तो गजब सुहाथे.

कन-कन करथे तरिया-नदिया
रौनिया ह तो मन ला भाथे.

जुन्ना कथरी अउ कमरा हर
हितवा बन के जाड़ भगाथे.

अब के पाहरो नवा जुग मा
साल-स्वेटर ह मन ललचाथे.

रात हर बैरी कस लागथे
नवा सुरुज हर प्रीत निभाथे.

साँझ

रचनाकार- अनिता चंद्राकर

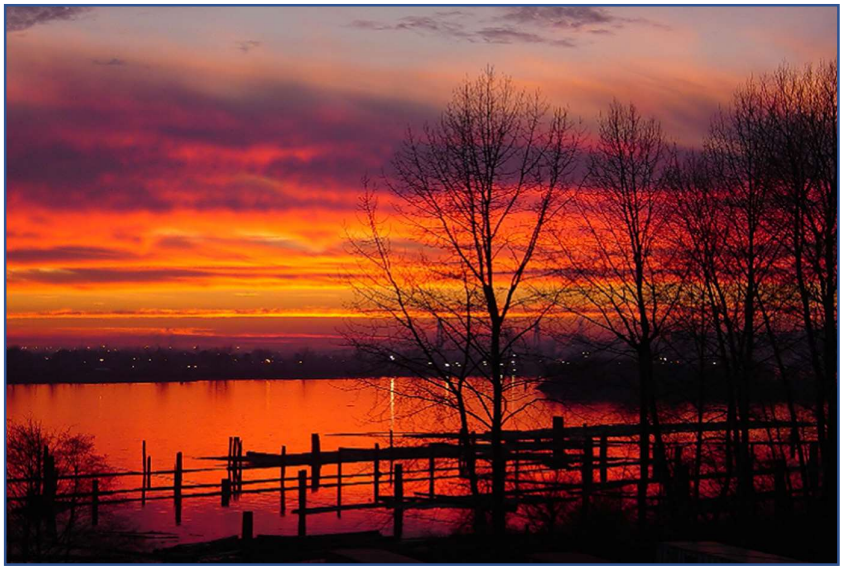

दिन भर की थकान के बाद,
विश्राम दिलाने आई साँझ.
डूबते सूरज की लाली प्यारी,
फिर घर की याद दिलाई साँझ..

जलनिधि पर दिनकर की किरणें,
ज्यों क्षितिज ने रंग बिखेरा.
सागर उछला स्नेह स्पर्श पा,
साँवली साँझ का रूप निखरा..

नीड़ की ओर लौटते पंछी,
गलियों में रंभाती, दौड़ती गायें.
दे रही संकेत हमें ये,
साँझ अब ढलने को आए..

सांध्य दीप जल उठे द्वार पर,
गूँजे घर में आरती का स्वर.
न भूले उस विधाता को हम,
रहे सबका जीवन सुखकर..

हमारे प्रेरणास्रोत- स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंदजी का जन्म १२ जनवरी, १८६३ को कलकत्ता में हुआ, इनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त कलकत्ता हाईकोर्ट के एक प्रसिद्ध वकील थे, उनकी माता भुवनेश्वरी देवी सभी धर्मों को मानने वाली थीं, पारिवारिक वातावरण के कारण उनमें बचपन से ही हिंदू धर्म और आध्यात्म का गहरा प्रभाव पड़ गया.

पिताजी ने बहुत ही कम उम्र में स्कूल में उनका दाख़िला करवा दिया, उन्हें बचपन से ही नयी-नयी चीजों को जानने की जिज्ञासा थी, इसी जिज्ञासा ने उन्हें दर्शन शास्त्र, धर्म, इतिहास, सामाजिक विज्ञान, साहित्य, वेद, उपनिषद, भगवद गीता, रामायण, महाभारत, पुराण सहित अन्य विषयों का भी महान ज्ञाता बना दिया, विषयों के साथ-साथ, वह शारीरिक व्यायाम व खेलों में भी रुचि लिया करते थें, उन्होंने कलकत्ता के प्रेज़िडेन्सी कॉलेज से स्नातक की पढ़ाई पूरी की.

एक बार स्वामीजी और उनके साथी, दक्षिणेश्वर स्थित काली मंदिर गए, वहाँ उनकी मुलाक़ात मंदिर के पुजारी रामकृष्ण परमहंस से हुई, स्वामीजी, परमहंस के विचारों से इतने प्रभावित हुए, कि उन्हें अपना गुरु बना लिया, वह ६ वर्षों तक उनकी सेवा में संलग्न रहे, उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस की मृत्यु के पश्चात वह पैदल ही पूरे भारतवर्ष की यात्रा पर निकल गए, इसी दौरान विवेकानंद जी ने गुरु की याद में रामकृष्ण मठ, रामकृष्ण मिशन की स्थापना की.

स्वामी विवेकानंदजी जब शिकागो में रहते थे, तब वहाँ के पुस्तकालय से बड़ी मात्रा में पुस्तकों को उधार लिया करते थें, और एक दिन में ही उन्हें लायब्रेरियन को वापस कर देते थे, अचंभित हो कर लायब्रेरियन ने स्वामी विवेकानंद से पूछा की जब उन्हें पढ़ना ही नहीं था तो किताबें उधार क्यूँ ली? जब स्वामीजी ने कहा कि उन्होंने सारी किताबें पढ़ ली हैं, तो लायब्रेरियन को भरोसा ही नहीं हुआ और उसने उनकी परीक्षा लेने की सोची, वह एक किताब से किसी भी पृष्ठ का चयन कर उनसे प्रश्न करती, तो स्वामीजी पुस्तक पर बिना नज़र डाले सही जवाब देते, उनसे ऐसे और कई सवाल पूछे गए और उन्होंने सभी के सही जवाब दिए, इसी ज्ञान और अभूतपूर्व स्मरण शक्ति के कारण वह जब लोगों के बीच भाषण देते तो लोग बिना हिले घंटो उन्हें सुनते.

स्वामी विवेकानंदजी ने मात्र तीस वर्ष की आयु में शिकागो में हुए विश्व धर्म सम्मेलन में एक बेहद चर्चित भाषण दिया था, उन्हें प्रमुख रूप से भाषण की शुरुआत “मेरे अमरीकी भाइयों और बहनों” के साथ करने के लिए जाना जाता हैं, स्वामी जी द्वारा दिए गए भाषण में उनकी भाषा शैली और ज्ञान से अमेरिकी भी इतने प्रभावित हुए की उन्हें “साईक्लोनिक हिंदू” का नाम दिया.

स्वामी विवेकानंद के अनमोल विचारों ने उनको महान पुरुष बनाया, वे हमेशा भाई-चारा, प्रेम की शिक्षा देते थे, उनका मानना था की प्रेम और भाईचारे से जीवन के हर संघर्ष से आसानी से निपटा जा सकता हैं, इतने गुणों से धनी व्यक्ति का भारत भूमि में जन्म लेना, भारत को पवित्र और गौरवान्वित करता हैं.

कपड़े

रचनाकार- अल्का राठौर

तरह- तरह के पहने कपड़े,
सुंदर- सुंदर, रंग बिरंगे,
कोई साधारण, कोई चमकीले,
कोई सफेद, कोई चटकीले.,

त्योहारों का उत्साह बढ़ाए,
सबसे प्यारा हमें दिखाए,
रेनकोट बारिश से बचाए,
स्वेटर ठंड दूर भगाए.,

गर्मी में सादा कपड़ा भाता,
तेज धूप से हमें बचाता.
सर्द रात में कंबल ओढ़ो,
उसके अंदर सपने बुनो.,

कुर्ता- पजामा दादा को भाए,
सूती साड़ी दादी को लुभाए,
जींस, टी शर्ट पापा जी पहने,
मम्मी की कुर्ती के क्या कहने..

दादी, दादा, मम्मी, पापा
भैया, दीदी छोटू, छोटी,
तरह तरह के पहने कपड़े,
सुंदर-सुंदर, रंग-बिरंगे..

सर्दी में है उलझन

रचनाकार-डॉ, सतीश चन्द्र भगत, बनौली, दरभंगा

ठंडा पानी,
नल में भैया.
कहाँ नहाऊँ?
ताल-तलैया.
कैसी उलझन,
दैया री दैया.

कहाँ गया जी,
पूस का जाड़ा.
कैसे मैं पढ़ू ?
कठिन पहाड़ा
थर - थर काँपे
खूँटे पर गैया.
हाय री दैया.
दैया री दैया.

<u>मान ल पाथे</u>

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

जउन ह पढ़े मा मन लगाथे
उहीच्च ह आगू बढ़ पाथे.

मिहनत ले जउन देह चुराथे
जिनगी बर उही ह पछताथे.

दूसर के कहना मा चलथे
परबुधिया जी उही कहाथे.

रद्दा खुद बर अपन बनाथे
जग मा भैया नाम कमाथे.

भाखा- बोली जेकर सुग्घर
उहीच्च हर तो जस ल पाथे.

जिनकर भुजा मा ताकत हे
मनखे उही जोद्धा कहाथे.

जे 'बरस' के पाछू रेंगथे
जिनगी भर ओ मान ल पाथे.

कहती मुझसे मेरी नानी

रचनाकार- राजेन्द्र श्रीवास्तव, विदिशा, म.प्र

पहले मिर्च हरी होती है
पक कर सुर्ख लाल हो जाती
वह इतनी तीखी होती है
खाते समय रुलाई आती,

गन्ने का रस मीठा होता
खट्टे-मीठे बेर रसीले
नीबू का रस खट्टा होता
हरे रहें या हों वे पीले.

बिना नाक-भौंहें सिकुड़ाए
बड़े शौक से खाते केला
मुँह में कड़वाहट आ जाती
अगर देख लें कहीं करेला,

इनके स्वाद नहीं बदलेंगे
भले बदल दो मिट्टी, पानी,
इन्हें मिले ये गुण बीजों से
कहती मुझसे मेरी नानी.

हमारे पौराणिक पात्र- वराहमिहिर

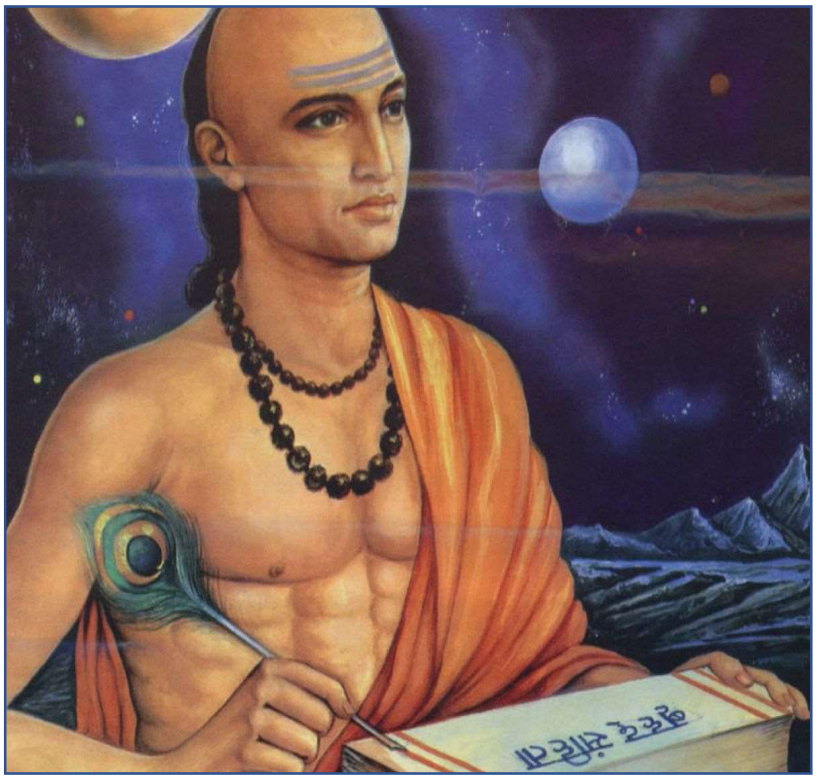

वराहमिहिर (वरःमिहिर) ईसा की पाँचवीं-छठी शताब्दी के भारतीय गणितज्ञ एवं खगोलज्ञ थे, वाराहमिहिर ने अपने पंचसिद्धान्तिका में सबसे पहले बताया कि अयनांश का मान 50.32 सेकेण्ड के बराबर है.

कापित्थक (उज्जैन) में उनके द्वारा विकसित गणितीय विज्ञान का गुरुकुल सात सौ वर्षों तक अद्वितीय रहा, वरःमिहिर बचपन से ही अत्यन्त मेधावी और तेजस्वी थे, उन्होंने अपने पिता आदित्यदास से परम्परागत गणित एवं ज्योतिष सीखकर इन क्षेत्रों में व्यापक शोध कार्य किया, समय मापक घट यन्त्र, इन्द्रप्रस्थ में लौहस्तम्भ के निर्माण और ईरान के शहंशाह नौशेरवाँ के आमन्त्रण पर जुन्दीशापुर नामक स्थान पर वेधशाला की स्थापना - उनके कार्यों की एक झलक मात्र हैं, वरःमिहिर का मुख्य उद्देश्य गणित एवं विज्ञान को जनहित से जोड़ना था, वस्तुतः ऋग्वेद काल से ही भारत की यह परम्परा रही है, वरःमिहिर ने पूर्णतः इस परम्परा का परिपालन किया है.

वराहमिहिर का जन्म सन् ४९९ में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ, उनका परिवार उज्जैन के निकट कपित्थ(कायथा) नामक गाँव का निवासी था, उनके पिता आदित्यदास सूर्य भगवान के भक्त थे, उन्हीं ने मिहिर को ज्योतिष विद्या सिखाई, कुसुमपुर (पटना) जाने पर युवा मिहिर महान खगोलज्ञ और गणितज्ञ आर्यभट से मिले, आर्यभट से उसे इतनी प्रेरणा मिली कि उसने

ज्योतिष विद्या और खगोल ज्ञान को ही अपने जीवन का ध्येय बना लिया, उस समय उज्जैन विद्या का केंद्र था, गुप्त शासन के अन्तर्गत वहाँ पर कला, विज्ञान और संस्कृति के अनेक केंद्र पनप रहे थे, मिहिर इस शहर में रहने के लिये आ गये क्योंकि अन्य स्थानों के विद्वान भी यहाँ एकत्र होते रहते थे, समय आने पर उनके ज्योतिष ज्ञान का पता विक्रमादित्य चन्द्रगुप्त द्वितीय को लगा, राजा ने उन्हें अपने दरबार के नवरत्नों में शामिल कर लिया, मिहिर ने सुदूर देशों की यात्रा की, यहां तक कि वह यूनान भी गये, सन् ५८७ में वराहमिहिर की मृत्यु हो गई.

550 ई, के लगभग इन्होंने तीन महत्वपूर्ण पुस्तकें बृहज्जातक, बृहत्संहिता और पंचसिद्धांतिका लिखीं, इन पुस्तकों में त्रिकोणमिति के महत्वपूर्ण सूत्र दिए हुए हैं, जो वराहमिहिर के त्रिकोणमिति के ज्ञान के परिचायक हैं.

पंचसिद्धांतिका में वराहमिहिर से पूर्व प्रचलित पाँच सिद्धांतों का वर्णन है, ये सिद्धांत हैं: पोलिशसिद्धांत, रोमकसिद्धांत, वसिष्ठसिद्धांत, सूर्यसिद्धांत तथा पितामहसिद्धांत, वराहमिहिर ने इन पूर्वप्रचलित सिद्धांतों की महत्वपूर्ण बातें लिखकर अपनी ओर से 'बीज' नामक संस्कार का भी निर्देश किया है, जिससे इन सिद्धांतों द्वारा परिगणित ग्रह दृश्य हो सकें, इन्होंने फलित ज्योतिष के लघुजातक, बृहज्जातक तथा बृहत्संहिता नामक तीन ग्रंथ भी लिखे हैं, बृहत्संहिता में वास्तुविद्या, भवन-निर्माण-कला, वायुमंडल की प्रकृति, वृक्षायुर्वेद आदि विषय सम्मिलित हैं.

अपनी पुस्तक के बारे में वराहमिहिर कहते है:-
ज्योतिष विद्या एक अथाह सागर है और हर कोई इसे आसानी से पार नहीं कर सकता, मेरी पुस्तक एक सुरक्षित नाव है, जो इसे पढ़ेगा वह उसे पार ले जायेगी.
यह कोरी शेखी नहीं थी, इस पुस्तक को अब भी ग्रन्थरत्न समझा जाता है.

वराहमिहिर की कृतियों की सूची

- पंचसिद्धान्तिका,
- बृहज्जातकम्,
- लघुजातक,
- बृहत्संहिता
- टिकनिकयात्रा
- बृहद्यात्रा या महायात्रा
- योगयात्रा या स्वल्पयात्रा
- वृहत् विवाहपटल
- लघु विवाहपटल
- कुतूहलमंजरी

- दैवज्ञवल्लभ
- लग्नवाराहि

वैज्ञानिक विचार तथा योगदान

वराहमिहिर वेदों के ज्ञाता थे मगर वह अलौकिक में आँखे बंद करके विश्वास नहीं करते थे, उनकी भावना और मनोवृत्ति एक वैज्ञानिक की थी, अपने पूर्ववर्ती वैज्ञानिक आर्यभट की तरह उन्होंने भी कहा कि पृथ्वी गोल है, विज्ञान के इतिहास में वह प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने कहा कि कोई शक्ति ऐसी है जो चीजों को जमीन के साथ चिपकाये रखती है, आज इसी शक्ति को गुरुत्वाकर्षण कहते है.

वराहमिहिर ने पर्यावरण विज्ञान (इकोलॉजी), जल विज्ञान (हाइड्रोलॉजी), भूविज्ञान (जियोलॉजी) के संबंध में महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ की, उनका कहना था कि पौधे और दीमक जमीन के नीचे के पानी को इंगित करते हैं, आज वैज्ञानिक जगत द्वारा उस पर ध्यान दिया जा रहा है, उन्होंने लिखा भी बहुत था, संस्कृत व्याकरण में दक्षता और छंद पर अधिकार के कारण उन्होंने स्वयं को एक अनोखी शैली में व्यक्त किया था, अपने विशद ज्ञान और सरस प्रस्तुति के कारण उन्होंने खगोल जैसे शुष्क विषयों को भी रोचक बना दिया, जिससे उन्हें बहुत ख्याति मिली, उनकी पुस्तक पंचसिद्धान्तिका (पांच सिद्धांत), बृहत्संहिता, बृहज्जात्क (ज्योतिष) ने उन्हें फलित ज्योतिष में वही स्थान दिलाया है जो राजनीति दर्शन में कौटिल्य का, व्याकरण में पाणिनि का और विधान में मनु का है.

त्रिकोणमिति

कई त्रिकोणमितीय सूत्र वाराहमिहिर ने प्रतिपादित किये हैं, वाराहमिहिर ने आर्यभट प्रथम द्वारा प्रतिपादित ज्या सारणी को और अधिक परिशुद्ध बनाया.

अंकगणित

वराहमिहिर ने शून्य एवं ऋणात्मक संख्याओं के बीजगणितीय गुणों को परिभाषित किया

संख्या सिद्धान्त

वराहमिहिर 'संख्या-सिद्धान्त' नामक एक गणित ग्रन्थ के भी रचयिता हैं जिसके बारे में बहुत कम ज्ञात है, इस ग्रन्थ के बारे में पूरी जानकारी नहीं है क्योंकि इसका एक छोटा अंश ही प्राप्त हो पाया है, प्राप्त ग्रन्थ के बारे में पुराविदों का कथन है कि इसमें उन्नत अंकगणित, त्रिकोणमिति के साथ-साथ कुछ अपेक्षाकृत सरल संकल्पनाओं का भी समावेश है.

क्रमचय-संचय

वराहमिहिर ने वर्तमान समय में पास्कल त्रिकोण (Pascal's triangle) के नाम से प्रसिद्ध संख्याओं की खोज की, इनका उपयोग वे द्विपद गुणाकों (binomial coefficients) की गणना के लिये करते थे.

प्रकाशिकी

वराहमिहिर का प्रकाशिकी में भी योगदान है, उन्होंने बताया कि परावर्तन कणों के प्रति-प्रकीर्णन (back-scattering) से होता है, उन्होंने अपवर्तन की भी व्याख्या की.

वरहमिहिर के विभिन्न विषयों के योगदान ने भारतवासियों को गौरवान्वित किया और भारत को सदैव अग्रणी रखा है, उनके महान खोज एवं ज्ञान के लिए संसार उन्हें सदा याद रखेगा.

नारी

रचनाकार- कु.लवली यादव, कक्षा दशवीं, शा.उ.मा.वि, पहंडोर, दुर्ग

कल तक जो थी नादान,
बना रही है आज खुद की पहचान.
मिला नहीं उन्हें कभी सम्मान,
होता रहा सदा घोर अपमान.
शिक्षा से बन रही है अब महान,
बढ़ रहा है समाज में उनका मान.
पुरुषों से आगे है नारी,
शिक्षा से हर क्षेत्र में बाजी मारी.
नारियों से ही होती दुनिया प्यारी,
नारी से ही है ये दुनिया सारी.
शिक्षा से आई इनमें नई जान,
बना रही है अपनी खुद की पहचान.

किसान

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

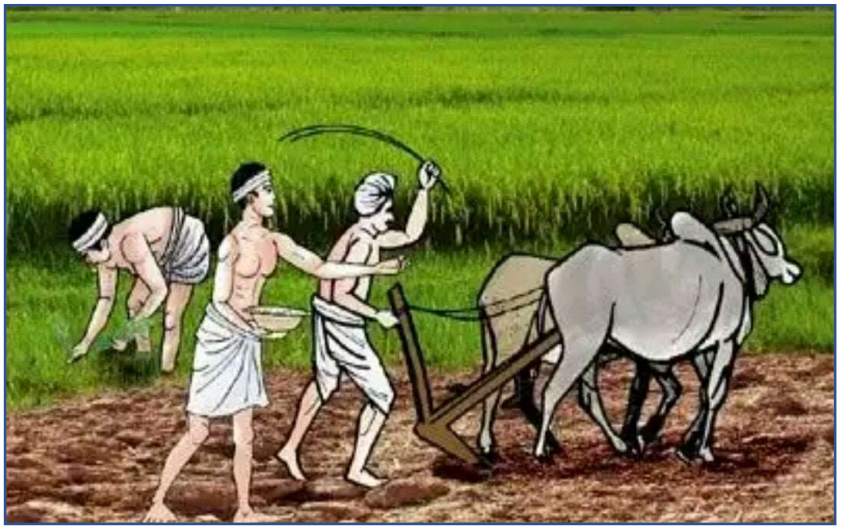

खेतों में फसलें लहराते.
अन्न किसान उगाते हैं..
कड़ी धूप में दिन भर रहते.
तब हम भोजन पाते हैं..

बंजर धरती सोना उगले.
कड़ी मेहनत करते हैं..
गर्मी-सर्दी, बरसातों में.
नहीं किसी से डरते हैं..

फसल जीवन भर वे उगाते.
तभी बैठ के हम खाते हैं..
बूँद पसीना रोज बहाते.
तब वे घर पर आते हैं..

अब क्या होगा सोच रहे हैं.
अन्न कहाँ से लाएँगे.
घर में बच्चे भूखे सोते.
भोजन कैसे खाएँगे..

कुछ तो दया दिखाओ भगवन.
बच्चें भी अब रोते हैं.
अन्न नहीं है खाने को अब.
भूखे रहकर सोते हैं..

तुम जरा सा सीधे बनना

रचनाकार- रेणुका सिंह

तुम जरा सा सीधे बनना,
टेढ़ी-मेढ़ी इस दुनिया में,
रंग बदलती इस दुनिया में,
तुम जरा सीधे पथ चलना.
तुम जरा सा सीधे बनना.

कदम-कदम पर यहाँ तुम्हारे,
कदमों को रोका जाएगा,
सही दिशा से तुम्हें भटकाकर,
फिर पीछे खींचा जाएगा.
सही-गलत के इस उठा-पटक में
अटल सत्य सा तुम रहना
तुम जरा सा सीधे बनना.

चालाकों से भेंट तुम्हारी,
रोज हुआ करेगी.
उनकी मीठी-मीठी बोली,
मन को छुआ करेगी.
पर तुम मौन ही रहना,
और सत्य राह पर चलना,
अपनी निश्छलता से तुम,
मानवता की नई राह बुनना.
तुम जरा सा सीधे बनना

मैं भारत की माटी हुँ

रचनाकार- शालिनी पंकज दुबे

कहते है इतिहास अपने आप को दोहराता है, पहले भी महामारी का ऐसा दौर आया था.क्या कभी किसी ने सोचा था कि ऐसा दिन भी आएगा जब पूरा विश्व संकटग्रस्त हो जाएगा?

स्थिति इतनी खराब हो जाएगी कि कोई समझ ही नही पाएगा.

टीवी और अखबारों में कोरोना की खबरें चल रही थी, लोग अपने काम में व्यस्त थे, दिनचर्या की शुरुआत जरूर अखबारों से होती थी और रात न्यूज़ चैनल में विश्व की खबरे सुनकर, मन में थोड़ा भय जगह बनाने लगा था पर घर से निकलना भी तो जरूरी था, अपने काम पर जिससे रोजी-रोटी चलती है, अगर मन के किसी कोने में डर ने जगह बनाना शुरू भी किया तो दिल में आत्मविश्वास भी था, वही आत्मविश्वास जो रणभूमि में एक योद्धा के हृदय में होता है.

ये आत्मविश्वास यूँ ही नही आया था, ये आया था क्योंकि मैं पवित्र भारत की भूमि हुँ, गौतम और महावीर की तपोभूमि हुँ, कितने ऋषि मुनि, साधु सन्यासियों ने और स्वयं भगवान ने जन्म लेकर मुझ पावन मिट्टी को अजेय बना दिया था, इतना कि कण-कण में मृत्यु का भय नही सिर्फ विजय की कामना होती है, मैं मातृभूमि इतनी पावन हुई जब भारत की माटी में मां लक्ष्मी सीता का रूप लेकर प्रकट हुई और मुझ वसुंधरा में ही समाहित भी हो गई, यहाँ भगवान है या नही ये बात ही नही, यहाँ भगवान को मानने वाले बहुत है, माँ नर्मदे 'नदी' रूप में है तो स्वर्ग से पतित पावनी गंगा मैया भी है, यमुना, सरस्वती, जैसी पवित्र नदियाँ हैं जिनमें जन-जन

की आस्था है, ये पवित्र नदियाँ स्नेह के साथ मुझसे लिपटकर यूँ बहती है जैसे एक दिहाड़ी मजदूर स्त्री की छाती से बँधी उसकी संतान, मेरी ये पुत्रियाँ ही तो है जो मेरा गौरव बढ़ाती हैं.

मैं वही भारतभूमि हुँ जहाँ बालिका स्वयं साक्षात दुर्गा स्वरूपा है, गाय -गोमाता व वृक्षों को भी पूजा जाता है, यही वजह है कि यहाँ के लोगो का, मेरी संतानों का आत्मविश्वास गजब का है, जो ऐसी आपदा की कल्पना भी नही कर सकते क्योंकि मेरे कण-कण में भगवान बसा है, मैं भारत की माटी युगों -युगों का इतिहास समेटे अपने भविष्य को सँवारती हुँ, मैं भारतभूमि आस्था, विश्वास, पूजा, प्रेरणा, कर्म, धर्म, प्रेम, भावना, इच्छाशक्ति, साहस, बुद्धि सत्कर्म, तपस्या, पवित्रता, वीरता भाईचारा का दूसरा नाम हुँ.

यही वजह है कि इस भयानक महामारी ने दबे पाँव जब यहाँ दस्तक देना शुरू किया तो एक निर्णय लिया, कुछ आलोचनाएँ हुईं, कुछ मुसीबतें आई पर देशहित में कुछ कदम तो उठाना ही था.

11 मार्च को जब बच्चे स्कूल गए तो किसी ने नही सोचा था कि, अब स्कूल लंबे समय के लिए बंद होगा.

12 तारीख की रात तक खबर मिली और तेरह मार्च से स्कूल बंद हुए, भारत का भविष्य ये नन्हे बच्चे ही तो है उन्हें पहले सुरक्षित करना था.

तब भी निष्कंटक काम चल रहे थे, कहीं भागवत कथा, कही पूजा, कहीं आयोजन! कुछ झिझक के साथ चल रहे थे, जो सामने महामारी आ रही थी किसी ने सोचा नही था कि वो प्रवेश कर चुकी है.

वो दिन जब पहला लॉक डाउन हुआ, तब भी अंदाज नही था कि आगे कुछ बड़ी कठिनाई आ सकती है.आत्मविश्वास जो था.

जब अन्य देशों में इसकी भयावहता बढ़ रही थी, करुण क्रंदन व मृत्यु पर विलाप हो रहे थे, तब मैं भी सिहर उठी कि मेरी सन्तानो का क्या होगा, जो सम्पन्न हैं वो सम्हल जाएंगे पर मैं माँ थी, माँ का ध्यान हमेशा उस बच्चे की ओर जाता है जो तकलीफ में होता है, जो रोजी-रोटी की तलाश में अपना प्रदेश छोड़, दूसरी जगह गये, छोटे बच्चे, वृद्ध माता-पिता औऱ पत्नी भी, जब मिल, फैक्ट्रियाँ बंद हो जाएँगी, तो क्या होगा, झोपड़ी में जहाँ साँस लेने की भी जगह नही, दिन भर की मजदूरी के बाद थके हुए जब पनाह लेते है थकावट की वजह से कब नींद की आगोश में सो जाते है, हाँ गाँव का घर आँगन याद आता है पर जीविकोपार्जन के लिए बस रात को ही तो पनाह लेनी थी, लेकिन काम बंद होने के बाद तो यहाँ एक दिन भी रुकना मुश्किल है, कारण छोटी सी झोपड़ी औऱ गंधाती नालियाँ, पीने का पानी भी मुश्किल से नसीब

होता है, राशन भी इतना नही की कुछ दिन गुजारा हो सके, इतना तो नही कमाते की संचय कर सके, फिर गाँव भी तो जमा कर-करके पैसा भेजना होता है, हाँ अपना देश होकर भी प्रदेश तो दूसरा था, गाँव भी अपना हो तो दूसरे के घर माँग के खा ले, कोई भूखा नही सो सकता पर बहुमंजिला इमारतों के पीछे की झुग्गी झोपड़ी मानो पिंजरे में बंद पँछी की तरह मन फड़फड़ाने लगा, एक बेचैनी होने लगी कि कहीं प्राणान्त न हो जाये और अगर होना है तो एक जदोजहद तो करें कि घर पहुँच जाए.

वो समय था जब 21 दिनों के लिए लॉकडाउन हुआ, ' जो जहाँ है वो वही रहे." टीवी, अखबार सब जगह हर तरीके से ये सन्देश दिया गया, सब धार्मिक आयोजन, विवाह स्थगित हो गए, सबको घर में रहने का निर्देश दिया गया, मंदिर, देवालय के भी पट बंद हो गए, वो वक्त था, जब सर पे कफ़न बाँध पुलिस औऱ डॉक्टर निकले, देश की रक्षा के लिए, मैं जानती हुँ मेरे बच्चों के अंदर मेरे लिए अथाह प्रेम है, मातृभूमि के लिए भक्ति भावना है.

मैं मातृभूमि, जननी! मेरे साये में पूरा भारत वर्ष के मेरे बच्चे है, मुझे उन बच्चों की भी चिंता होने लगी थी जो विदेश की धरती पर रह रहे, जिनके माता-पिता, परिवार यहाँ पर वो वहाँ फँसे है, चिंता तो जायज थी, मैं आँचल के साये में सिमटे उन बच्चों का दर्द महसूस कर रही थी, जैसे बेटी का दर्द एक माँ समझती है, उन हर कोनो का महसूस कर रही थी जहाँ पीड़ा मानसिक तनाव से गुजर रहा था, जहाँ जदोजहद हो रही थी, जिंदगी व मौत के बीच, बस दुआ कर रही थी सृष्टि के रचयिता से की ऐसी स्तिथि दुबारा न आये, सबकुछ ठीक हो जाए.

स्कूल के दिन

रचनाकार- सोमेश देवांगन

वो स्कूल का दिन था बड़ा सुहाना.
सो उठकर के जल्दी से था नहाना..

नहाकर आते ही आती गृहकार्य की याद.
कुछ लिखे नहीं, कैसे बनाएंगे आज बात..

थोड़ा-सा रोना, थोड़ा करते थे बहाना.
माँ कहती थी जल्दी स्कूल को जाना..

टिफिन बनाई माँ ने, डाली अचार रोटी.
बहना रोने लगी, जल्दी से डालो चोटी..

बस्तक बहुत लग रहा था जी भारी.
पाठ याद करना अभी भी था जारी..

जा पहुँचे सब अब अपने विद्यालय.
पहले ही था जी शिक्षक का कार्यालय..

शिक्षकों का सब करते है अभिवादन.
हुआ प्रार्थना सभा का जी आयोजन..

बस्तक से झांके रहे थे कॉपी -पुस्तक.
शिक्षक ने दी कक्षा में फट से दस्तक..

लेने लगे उपस्थिति हमारे कक्षा की.
कौन आये कौन नहीं ये समीक्षा की..

लगा पहला पीरियड, विषय हिंदी भाषा.
समझाई संज्ञा की यह है परिभाषा..

लगा दूसरा पीरियड, विषय अंग्रेजी भाषा.
सीखो जल्दी अंग्रेजी, यही की हम सबसे आशा..

तीसरा पीरियड लगा गणित का, जीरो एक वाली.
सब सवाल जल्दी सीख गए बच्चों बजाओ ताली..

हुआ भोजन का अवकाश, बजी स्कूल की घँटी.
हाथ धुलाने पानी लिए, खड़ी है देखो आंटी..

टिफिन रख हाथ जोड़कर करें ईश्वर को प्रणाम.
भोजन चालू किया सभी ने, ले के हरि का नाम..

मिलबाँट कर सब ने किया अब भोजन.
देखो लड्डू बाँट रहे थे सोहन और मोहन..

हुआ समाप्त अब भोजन का अवकाश.
कोई बच्चा नहीं होता था कभी निराश..

पढ़ने लिखने में रखते थे दृढ़विश्वास.
मुन्नी मुन्ना सबका देखो हो रहा विकास..

लगा चौथा पीरियड जी अब पर्यावरण
सीख रहे कैसे हो रहा मिट्टी का छरण..

लगा पांचवा पीरियड ये सदाचार की.
बच्चे बन रहे मूर्ति, शिष्टाचार की..

लगा पीरियड छठवां खेल कूद और व्यायाम.
करते सभी इस समय सिर्फ प्राणायाम..

लंबी घँटी बजी हुआ अब ये अवकाश.
विसर्जन मंत्र करवा रहा देखो विकास..

छुट्टी हुई भागे दौड़े चले अब घर की ओर.
देखो बच्चे जा रहे घर, करते हुए बहुत शोर..

क्रिसमस-डे

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

आओ बच्चों सारे मिलकर,
क्रिसमस-डे मनाएंगे..
खूब सारे खिलौने टॉफी,
मिलकर के हम खाएंगे..

नये-नये खिलौने देख कर,
बच्चे खुश हो जाते हैं..
खेल-खिलौना खेल खेल कर,
खुशियाँ मन में लाते हैं..

लाल-लाल कुर्ता पैजामा,
टोपी लाल लगाते हैं..
सफेद मूँछ लगाकर के वह,
पास सभी के जाते हैं..

ग्रीन-ग्रीन क्रिसमस-ट्री देखकर,
सारे खुश हो जाते हैं..
नये करतब दिखाते सारे,
बच्चे गाना गाते हैं..

नये साल पर नया सन्देश,
सांता देकर जाते हैं..
खूब बजाते ताली बच्चे,
मिलकर धूम मचाते हैं..

गन्ना पूजा

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

छन्न पकैया छन्न पकैया, बाजारों में जाते.
लंबे-लंबे, मोटे-मोटे, मिलकर गन्ने लाते..

छन्न पकैया छन्न पकैया, भीड़ लगी है भारी.
बाजारों में जाकर देखो, दिखती दुनिया सारी..

छन्न पकैया छन्न पकैया, एकादशी मनाते.
सभी बनाते मिलकर मण्डप, तुलसी ब्याह रचाते..

छन्न पकैया छन्न पकैया, दीपक सभी जलाते.
नये -नये पकवान बनाकर, खुशी - खुशी सब खाते..

छन्न पकैया छन्न पकैया, मिलकर गन्ने खाते.
झूम रहे हैं सारे बच्चे, घर-घर खुशियाँ लाते..

छन्न पकैया छन्न पकैया, श्रद्धा सुमन चढ़ाते.
मिट जाये सब संकट सारे, आशीर्वाद बढ़ाते..

शुभी का शंख

रचनाकार- दीपक कंवर

समुद्र में एक मनोरम स्थान मे एक नन्ही मछली शुभी अपने माता पिता के साथ रहती थी, शुभी को घूमने फिरने का बहुत शौक था, कभी-कभी वह अकेली ही घूमने चली जाती थी, ऐसे ही एक दिन घूमते हुये उसे सुनहरे रंग का शंख मिला, ऐसा शंख उसने पहले कभी नहीं देखा था, कौतूहलवश शंख उठाकर वह जोर-जोर से फूँकने लगी, शंख की आवाज इतनी मधुर थी कि आसपास की सारी मछलियां और अन्य जीव जन्तु मंत्रमुग्ध होकर उसके चारो ओर इकट्ठा हो गये, शुभी इतने सारे जीव जंतुओं को देखकर डर गई और उसके हाथ से शंख गिर गया, सभी जीव जंतुओं ने ताली बजाते हुए शुभी से फिर से शंख बजाने का आग्रह किया, शुभी हड़बड़ी मे शंख को उल्टी तरफ से फूँकने लगी, पर इस बार शंख से इतनी डरावनी आवाज निकली कि सभी डर कर भाग गए.शंख लेकर शुभी घर आ गई, और इस बारे मे अपने माता-पिता को बताय

एक दिन शुभी घूमते-घूमते बहूत दूर तक चली गई, अचानक उसे एक बड़ी मछली ने निगल लिया, शुभी डर गई और रोने लगी, बड़ी मछली कुछ आगे बढ़ी ही थी कि तभी उससे भी बड़ी मछली ने उसे निगल लिया, अब तीसरी मछली को भी कुछ दूर जाने पर सबसे बड़ी मछली ने निगल लिया, अब शुभी सहित दोनो मछलियाँ व्बड़ी मछली के पेट के अंदर थे.,

शुभी को अपने शंख की डरावनी आवाज के बारे मे याद आया और वह जोर-जोर से शंख फूँकने लगी, डरावनी आवाज से घबराकर व्हेल ने तीसरी मछली, तीसरी ने दूसरी और दूसरी मछली ने शुभी को मुँह से निकाल दिया और तीनो मछलियाँ डरकर भाग गईं, शुभी ने खुद को समुद्र मे आजाद पाकर राहत की साँस ली और वापस अपने घर आ गई, अब शुभी कभी भी अकेली घुमने नहीं जाती है.

उर उमंग भरता निर्झर

रचनाकार- प्रमोद दीक्षित मलय

झर -झर अविरल झरता निर्झर.
सर -सर अविरत बहता निर्झर..

सदा प्रवाहित प्रमुदित पथ में.
कलरव करता रहता निर्झर..

प्रस्तर से टकराता प्रतिपल.
मन की पीर न कहता निर्झर..

परसुख में निज खुशी मनाता.
हरदम कंटक सहता निर्झर..

नाना औषधि जल में घुलतीं.
सदा महकता रहता निर्झर..

यह जाने सीमा की मर्यादा.
पथ से नहीं बहकता निर्झर..

सदा पिलाकर शीतल मृदु जल.
थकन-तपन सब हरता निर्झर..

सतत चलो का संदेश सुना.
उर उमंग नित भरता निर्झर..

काजल के जूते

रचनाकार- वीरेन्द्र कुमार साहू

काजल की माँ गई बाजार,
काजल के लिए ले कर आई
जूतों का उपहार,
काजल ने जब जूते पहने
खुशी के मारे उछले-कूदे,
नाचे झूमे.

Christmas festival

Poet- Baldau Ram Sahu

Come on Ranu, Shanu, Bholu

Come on pony, moni, julie.

Come on Raju, come on Bablu

Celebrate the festival of happiness.

Christmas is the festival dear

Look at the stars are stuck

Happiness has come in a mesmerizing way

Seems like Diwali.

Will go with mother and father

We will bring something

Grandmother - Grandpa with love to us

We will get some clothes.

Santa Claus will come brother

The gift they will bring bro

Showing that love to the kids

That's why we come every year.

गौरैया

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे

ओ री चिरैया,
नन्हीं सी चिड़िया
अंगना में फिर आजा रे.
ना जाने कहाँ चली गई
आज के बच्चे ना जाने
क्या है गौरैया, कैसी चिरैया.
चीं-चीं की आवाज
कहाँ गुम हो गई.
हर घर चौखट के ऊपर, छप्पर के नीचे
हर छोटे- छोटे पेड़ों पर आशियाना
अब कहाँ लुप्त हो गई.
झुण्डों में उड़ना दिन भर चीं-चीं करना
अब कहाँ गुम हो गई.
जब सुंदर नन्हे बच्चों को दाना खिलाती, साथ उड़ना सिखाती
गिरे हुए बच्चों को हिम्मत देती और साथ उड़ा ले जाती
चहचहाता हुआ झुंड आँगन में हम दूर से देखते रहते
अब वह कहाँ दुर्लभ हो गई.

ओ री चिरैया
नन्हीं सी चिड़िया
अंगना में फिर आ जा रे.
आँगन, छत, मुंडेर पर चहचहाती गौरैया
अब कहाँ चली गई.
अंगना में फिर आ जा रे
चहचहाना अब फिर सुना जा रे
ओ री चिरैया नन्हीं सी चिड़िया
अंगना में फिर आ जा रे.

किसी के साथ बुरा मत करो

रचनाकार- कु.कल्याणी, कक्षा बारहवीं, शा.उ.मा, वि, पहंडोर, पाटन, दुर्ग

एक सुखी परिवार मे कुल 4 सदस्य थे माता-पिता एक बेटी और एक बेटा, पिता का नाम रमेश था, सब आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे थे, रमेश एक दुकानदार था एवं माता गृहिणी थी, बच्चे स्कूल जाते थे, सब कुशल मंगल चल रहा था, उनके घर के पास गोपाल रहने आया.गोपाल का रमेश के साथ व्यवहार ठीक नही था, वह रमेश की तरक्की देखकर जलने लगा था, एक दिन गोपाल ने यह तय किया कि वह रमेश की दुकान ठीक से चलने नही देगा इसलिए उसने रात मे सबके सोने के बाद रमेश की दुकान के अंदर चूहे छोड़ दिए, सुबह जब रमेश दुकान आया तो उसने देखा कि दुकान का सारा सामान चूहे कुतर गए हैं, वह बहुत दुखी हुआ, उसका बहुत नुकसान हो गया था, उसने नया सामान लाकर अपनी दुकान को फिर से सुव्यवस्थित किया, एक दिन गोपाल की तबीयत खराब हो गई उसके पास पैसे नही थे जिससे वह अपना इलाज करा सके तब सहायता के लिए रमेश आया एवं गोपाल को कुछ पैसे दिये जिससे वह अपना इलाज करा सके, यह देखकर गोपाल की आँखों में आँसू आ गए, वह अपने किये पर शर्मिंदा था, उसने रमेश को सारी बात बतायी और माफी माँगी, रमेश ने उसे माफ कर दिया और उसे अपनी दुकाम में काम पर रख लिया, दोनों अच्छे मित्र बन गए.

जब शहर हमारा सोता है

रचनाकार- आयुष सोनी, उमरिया

जब सर्द अँधेरी रातों में,
ये शहर हमारा सोता है.

कोई चीथड़ से तन को ढककर,
दो दाने जूठों के चखकर.
बस देख-देखकर तारों को,
सिसक-सिसककर रोता है.

जब शहर हमारा सोता है.

कोई दफ्तर से जब आता है,
बे-मन ही मन बहलाता है.
नींदों की करवट में तब वो,
कई सपने मन में बोता है.

जब शहर हमारा सोता है.

कोई प्रेमी सूनी रातों में,
अपने प्रियतम की बातों में.
जग-जाहिर खुशियों को लेकर,
कई ख्वाहिशें रोज़ संजोता है.

जब शहर हमारा सोता है.

एक बालक इन हालातों में,
फँसता जब रिश्ते-नातों में.
अपने बस्ते-सा भारी,
एक बोझ हमेशा ढोता है.

जब शहर हमारा सोता है.

एक मै भी हूँ जो सोच रहा,
खुद से ही खुद को पूछ रहा.
है कौन भला इन शहरों में,
जो पूनम की इन रातों में,
गहरी नींदों में होता है.

जब शहर हमारा सोता है.
जब शहर हमारा सोता है.

आया पढ़ना- लिखना अभियान

रचनाकार- कृष्ण कुमार ध्रुव"सृजन"

नवज्योति प्रकाश पुंज की लहर चली,
अंधकार दूर करने आया पढ़ना- लिखना अभियान..
जो कभी तम का हिस्सा हुआ करते थे,
उनके जीवन को रोशन कर देना होगा सम्मान..
आया पढ़ना- लिखना अभियान.,
उत्कृष्ट राष्ट्र बनाने की ओर कदम हैं बढ़ाए,
हर मानुष से बढ़ती है देश की शान..
आया पढ़ना- लिखना अभियान..
घर-घर, मोहल्ला जाकर चिन्हांकित कर,
हैं निरक्षर जो उनकी करनी है पहचान..
आया पढ़ना- लिखना अभियान..

शिक्षित करने स्वयं सेवी बन आगे आएँ,
पुनीत कार्य के भागी बन देना होगा सुज्ञान..
आया पढ़ना- लिखना अभियान..
अब तक बंद थे जो अंधेरों तले,
दूर नहीं वो दिन जब होगी जीवन में भान..
आया पढ़ना- लिखना अभियान..
वीर सिपाही बन करते जो वतन सेवा,
राष्ट्र निर्माण, अन्न उत्पादन में है इनका योगदान..

आया पढ़ना- लिखना अभियान..
शिक्षा बिना देश की प्रगति न बढ़ेगी,
अखंड राष्ट्र, एकता, भाईचारा का हैं ये ज्ञान..
आया पढ़ना- लिखना अभियान..
कालिख सी निरक्षरता को दूर करने आगे आएँ सब,
नए भारत के लिए हम सबका हो यही संकल्प..
आया पढ़ना- लिखना अभियान..
प्रौढ़ शिक्षा रूपी योजना की हुई है एक शुरुआत
बंद पट खोल तमस को दूर करने लिया है एक आग़ाज..
आया पढ़ना- लिखना अभियान..

बढ़ता नशा

रचनाकार- सोमेश देवांगन

मन है व्याकुल परेशान देख युवाओ में बढ़ता नशा.
मन से हारे, जग से हारे, अपनों का बना रहे तमाशा..

तमाशा बनने की भी मजबूरी बढ़ी ये बेरोजगारी है.
पढ़ -लिख लिए काम- धाम नहीं, ये हमारी लाचारी है..

तन, मन, धन तीनों कर दिए अर्पण, भविष्य सँवारने.
नशा ऍसा चढ़ा कि अब घर परिवार लगे उजाड़ने..

काम नहीं है हमारे पास ये कह, लगा मारने दो दम.
कहते हैं नशे से बढ़कर आगे, अब कुछ नही है कम..

क्यों कर रहे हो अपना जीवन नशे में बर्बाद मेरे भाई.
नशा कर के रोज मिलता क्या है, होती है रोज लड़ाई..

अभी भी वक्त है मेरे भाई, सम्भल जाओ न करो नशा.
आप से ही है, आप में ही है, पूरे परिवार का सुख बसा..

नटखट नन्ही

1. मैडम: नन्ही, स्वर और व्यंजन में फर्क बताओ ?
   नन्ही : मै'म, स्वर मुंह से बाहर निकलते हैं और व्यंजन मुँह के अंदर जाते हैं.

2. नन्ही (टीचर से): मैम, अगर आपका आशीर्वाद मिल जाये तो मैं अच्छे नंबर से पास हो जाऊँगी.
   टीचर - हाँ हाँ, पर तुमने तैयारी तो ठीक से की है ना ?
   नन्ही: तैयारी ही ठीक से की होती तो, आपके पास आशीर्वाद मांगने क्यों आती..

3. शिक्षक: खाना खाने से पहले हाथ धोने चाहिये``
   नन्ही: लेकिन मैं नहीं धोती
   शिक्षक: क्यों ?
   नन्ही: मैं खाना खाने के बाद धोती हूँ
   शिक्षक: ऐसा क्यों ?
   नन्ही: ताकि मोबाइल पर दाग ना पड़े

4. शिक्षक: भारत के मानचित्र में कुतुबमीनार कहाँ है?
   नन्ही: पता नहीं सर
   शिक्षक: तो बेंच पर खड़ी हो जाओ.
   नन्ही: (बेंच पर खड़ी होकर) यहाँ से भी नहीं दिख रहा सर

5. माँ: नन्ही घर में कायदे से रहना चाहिए, तुम्हें मेरी हर बात माननी चाहिए.
   नन्हीने सर हिकते हुए कहा- समझ गयी माँ, जैसे पापा रहते हैं

नन्ही चिड़िया

रचनाकार- शालिनी पंकज दुबे

खोलते ही खिड़की
आ बैठती है नन्हीं चिड़िया
रंग -बिरंगी हरे पीली सी
भाषा में अपनी कुछ-कुछ बतलाती है.
खिड़की के बाहर,
जो दिखे दूर तलक हरियाली,
उसका पैगाम सुनाती है.

देखकर हरियाली को
मन तरोताजा हो जाता है.
नंगे पाँव जो चलें
आँखों की रोशनी तेज हो जाती है.
ये पेड़ो की डाली जब झूम-झूम कर गाती है.

मन में उमंगें हिलोरे मारती है.
दूर तलक तक देख हरियाली
मानो हरी चुनरी में
माँ धरती इठलाती है.

हरे-भरे पेड़ों की छाँव से
शीतल हवा जो आती है.
तरो ताजा सुबह,
शाम भी गुलाबी लाती है.

करौ पढ़ाई

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

सब ले बढ़िया काम हे भाई
मिहनत कर के करौ पढ़ाई.

जउन मिहनत ले देह चुराथे
जिनगी बर उही ह पछताथे.

मिलजुल के तुम रहना सीखौ
लड़े-झगरे म नइ हे भलाई.

जउन हर पर के जीव दुखाथे
सच मा होथे उही कसाई.

कौनो रोग ल छोट झन जानो
धियान लगा के करौ दवाई.

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

वह गांव वाला आदमी...

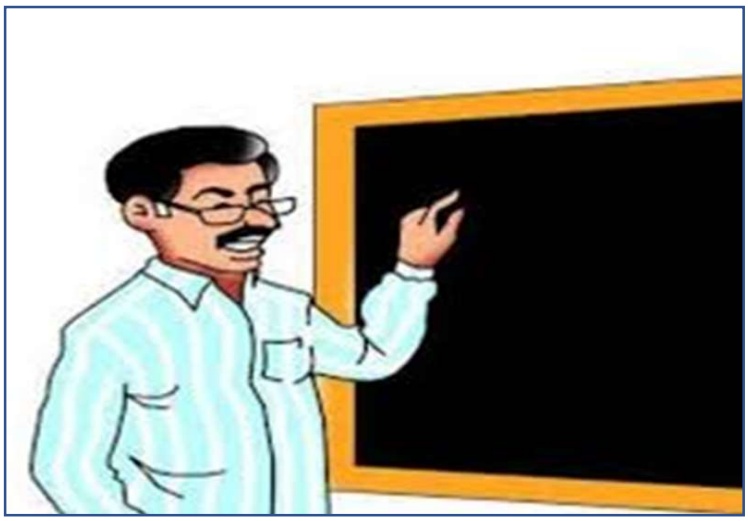

उस दिन भी आनंद सर को स्कूल से निकलने में देर हो गई, बच्चों को प्रैक्टिकल कराते - कराते प्राय: उन्हें रोज ही देर हो जाया करती थी, बाहर निकलकर उन्होंने देखा पूरे स्कूल में सन्नाटा बिखरा पड़ा था, गेट पर खड़ा चौकीदार उन्हीं की तरफ देख रहा था मानो कह रहा हो, आप जाएं तो ताला बन्द करूं, उन्होंने अपनी साइकिल उठाई और स्कूल से बाहर निकल आए.

उनका घर कुंदनपुर में था जो यहां से लगभग दस से बारह किलोमीटर दूर था, लगभग एक घंटा तो लग ही जाता था इस रास्ते को तय करने में, रास्ते में एक बड़ी नदी पड़ती थी, इसे पार करने के बाद लगभग दो - तीन किलोमीटर का रास्ता काफी चढ़ाव भरा था, चढ़ाव पर उनकी साइकिल धीरे - धीरे चल रही थी, अचानक उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति दौड़ते हुए उन्हें पार करके आगे निकला, वह लगभग हांफ रहा था लेकिन फिर भी चलने के बजाय दौड़ रहा था, शक्ल - सूरत से वह गांव का व्यक्ति लग रहा था, घुटनों तक एक मैली - सी धोती और ऊपर आधी बांह का कुर्ता उसने पहन रखा था, आनंद सर को लगा की कुछ तो बात है, उन्होंने उस व्यक्ति को पुकारा और रुकने को कहा, उसके नजदीक पहुंच कर उन्होंने पूछा, क्या बात है भाई, क्यों दौड़ रहे हो, उसने बताया कि उसे कुंदनपुर जाना है, वहां से सात बजे एक बस निकलती है, उस बस से उसे अपने गांव जाना है, गांव में उसका परिवार रहता है, उसे आज ही ये खबर मिली है कि उसकी बच्ची बीमार है, यदि बस नहीं मिलती तो वह अपने घर नहीं पहुंच पाएगा.

ओह.., आनंद सर एक क्षण के लिए चुप हो गए, उन्होंने अपनी घड़ी देखी, साढ़े छह बज रहे थे, उन्होंने सोचा, यह आदमी कितना भी दौड़े, सात बजे तक कुंदनपुर नहीं पहुंच सकता, उन्होंने उस ग्रामीण से कहा, भाई, मैं भी कुंदनपुर ही जा रहा हूं, तुम साइकिल पर पीछे बैठो, मैं कोशिश करता हूं कि तुम्हें तुम्हारी बस मिल जाए, उस व्यक्ति को कुछ संकोच हुआ, उसने कहा, मैं चला जाऊंगा साहेब, आप तकलीफ मत उठाइए, आनंद ने कहा, तकलीफ की कोई बात नहीं है, तुम बैठो, हम चलते हैं, और फिर उसे अपनी साइकिल के कैरियर पर बिठाकर वे कुंदनपुर की ओर चल पड़े, उनसे जितना तेज चलाते बन रहा था वे साइकिल चला रहे थे.

कुंदनपुर पहुंचते-पहुंचते आनंद सर पसीने से नहा चुके थे, वे उस व्यक्ति को लेकर सीधे बस स्टॉप पहुंचे, संयोग से स्टॉप पर बस खड़ी थी, बस को देखते ही उस आदमी का चेहरा खिल उठा, उसकी खुशी देखकर आनंद सर भी अपनी तकलीफ भूल गए, उनके चेहरे पर थकान के बाद भी एक प्यारी सी तसल्ली से भरी मुस्कुराहट आ गई, उन्होंने उससे कहा, भाई देखो, तुम्हारी बस खड़ी है, अब तुम बस में आराम से जा सकते हो, वह व्यक्ति कुछ कह ना सका लेकिन उसके चेहरे पर कृतज्ञता के अद्भुत भाव थे, उसने अपने कुर्ते की जेब से बारह आने निकाले और उसे सर की हाथ में रखते हुए अपने हाथ जोड़ लिए.

आनंद सर उसके इस व्यवहार से गुस्से से भर उठे, उनका चेहरा तमतमा उठा, एक क्षण के लिए उन्हें लगा यह व्यक्ति क्या समझ कर उन्हें पैसे दे रहा है, क्या वे पैसे के लिए उसे बिठाकर लाए हैं, पर तुरंत ही उन्हें लगा उसके चेहरे के भाव तो ऐसे नहीं हैं, उन्हें समझ में नहीं आया कि वे कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त करें.

दी गयी अधूरी कहानी को पूरा कर हमें जो कहानी प्राप्त हुई वो इस प्रकार हैं-

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गयी कहानी

उन्हें समझ में नहीं आया कि वह कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त करें.आनंद सर, उस गाँव वाले आदमी से कुछ न कहते हुए उसकी ओर देखते रह गए, तभी उनकी नजर उसके पैरों पर पड़ी, उस आदमी के पैर में छाला पड़ गया था जिससे रक्त बह रहा था, बस छूटने के पहले पहुँचने की धुन में उसने नंगे पैरों से ही दौड़ लगाई थी.आनंद सर यह सोचते हुए जल्दी से पास की दुकान से एक जोड़ी चप्पल खरीदकर, बस के पास पहुँचे और उस आदमी को चप्पलें दे दीं.वह आदमी आनंद सर के प्रेम और संवेदनशीलता देखकर भावविह्वल हो गया, है.आनंद सर मुस्कुराते हुए उसकी बच्ची के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हुए अपने घर लौट गए.

टेकराम ध्रुव' दिनेश' द्वारा पूरी की गयी कहानी

पसीने से लथपथ आनंद सर ने पसीना पोंछते हुए उस व्यक्ति को पैसे वापस करते हुए कहा- आज मुझे किसी की मदद करने का अवसर मिला और मैंने मदद की, देखो तुम्हारी बस थोड़ी देर में छूटने वाली है, आज मैं बहुत खुश हूँ कि तुम्हें समय पर बस स्टाॅप तक पहुँचा पाया, ये सब मैंने पैसों के लिए नहीं किया, तुम्हें परेशान देखकर मैंने अपना फर्ज निभाया है बस.'

उस व्यक्ति ने कहा- ' साहब मैं कैसे आपका आभार व्यक्त करूँ समझ में नहीं आ रहा.एक बार और ऐसे ही एक व्यक्ति से लिफ्ट ली थी, अपने गंतव्य तक पहुँचने के बाद मैंने उसे रुपए दिए थे, तो सोचा., ' आनंद सर ने बीच में ही उसे रोकते हुए कहा- ' ज्यादा सोचने और बात करने का समय नहीं है, वहाँ गाँव में तुम्हारी बच्ची बीमार है, वहाँ जल्दी पहुँचकर उसका इलाज कराना ज्यादा जरुरी है, इसलिए व्यर्थ की बातों में अपना समय नष्ट न करो.बस छूटने ही वाली है जल्दी से गाँव के लिए रवाना हो जाओ, मैं शिक्षक हूँ जहाँ से हम आ रहे हैं उसी स्कूल में, अगर किसी प्रकार की परेशानी आए तो बेझिझक मुझसे मिल सकते हो.'

आनंद सर की बात सुनकर वह गाँव वाला आदमी भावविभोर हो गया, उसकी आँखे डबडबा गईं, डबडबाई आंखों से वह बस की ओर चल पड़ा.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

मोहन की मुश्किल

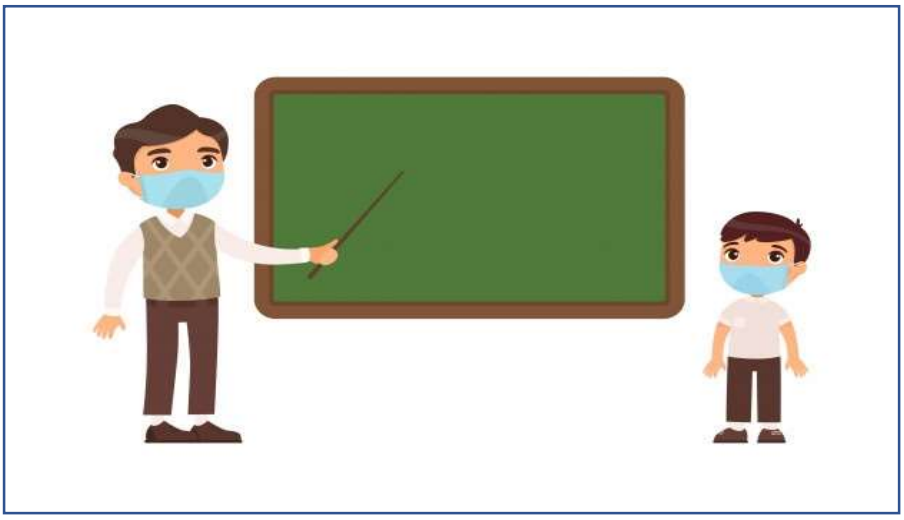

आज तो यह तय था कि मोहन को हिन्दी के गुरूजी से डाँट खानी पड़ेगी, बात यह थी कि मोहन लगातार तीन दिनों से अपना होमवर्क पूरा नहीं कर रहा था, उसने अपने दोस्तों से पूछा कि क्या उन सब ने अपना -अपना होमवर्क पूरा किया है ? सभी बच्चे हिंदी का होमवर्क गुरूजी से डर के कारण हर दिन पूरा करके आते थे, मोहन हिंदी में कमज़ोर था, उससे मात्राओं में बहुत गलतियाँ होती थीं, वह इसी कारण गुरू जी से कई बार डाँट खा चुका था, पिछले दो दिनों से गुरू जी किसी कारणवश विद्यालय नहीं आ रहे थे, मोहन दो दिनों तक तो बच गया, पर आज उसे डाँट पड़ना पक्का था, कक्षा में आते ही सबसे पहले गुरू जी ने मोहन से ही होमवर्क देखने की शुरुआत की, मोहन की कॉपी देखकर गुरू जी का चेहरा गुस्से से लाल हो रहा था और बेचारा मोहन डरा सहमा सा सिर झुकाकर गुरूजी के सामने खड़ा था.

कहानी को इस मोड़ पर छोड़ते हुए हम आपको जिम्मेदारी देते हैं आप इसे पूरा कर हमें माह की 15 तारीख तक ई मेल**kilolmagazine@gmail.com** पर भेज दें, आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

प्यारी नानी

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

गुस्सा छोड़ो प्यारी नानी
कहो न तुम कथा-कहानी
मेघ कहाँ से लाता होगा
भर-भर कर इतना पानी.

चंदा मामा दूर-दूर क्यों
हमदम हमसे रहते हैं
आसमान से सूरज दादा
आकर क्यों वह तपते हैं.

हमको तुम बतलाओ नानी
कलियाँ कैसे खिल आतीं
और बाग में तितली रानी
आकर क्यों रस पी जाती.

बोलो - बोलो, बोलो नानी
सागर जल क्यों है खारा
औ' बादल भैया जाने क्यों
दे जाता है पानी सारा.

मानवाधिकार का आधार है संवेदना एवं समताभरा व्यवहार

रचनाकार- प्रमोद दीक्षित मलय

मनुष्य एक शिशु के रूप में जन्म लेता है और शिशु को जन्म लेते ही मानव के रूप में गरिमामय जीवन जीने का अधिकार प्राकृतिक रूप से प्राप्त हो जाता है, प्रत्येक मानव के लिए स्वतंत्रता, समानता और सम्मान के अधिकार के साथ जीवन में आगे बढ़ने और समाज, जीवन के किसी भी क्षेत्र में काम करने एवं आगे बढ़ने हेतु भयरहित निर्बाध खुला मार्ग उपलब्ध है, किसी भी मानव के साथ नस्ल, लिंग, जाति, भाषा, धर्म, विचार, जन्म, रंग, क्षेत्र एवं देश के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जा सकता, संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 10 दिसंबर, 1948 को विश्व मानवाधिकार घोषणा पत्र जारी कर मानव अधिकारों की रक्षा कर मानव मूल्यों एवं आदर्शों के संरक्षण पर बल दिया गया है, वर्ष 1950 से संयुक्त राष्ट्र से सम्बद्ध देशों द्वारा मानवाधिकार दिवस मनाने एवं प्रचार प्रसार करने हेतु सतत् प्रयास सराहनीय हैं, प्रत्येक वर्ष 10 दिसंबर को मानवाधिकार दिवस मना कर संपूर्ण विश्व में मानव अधिकारों के प्रति सजगता और जागरूकता का प्रचार-प्रसार करते हुए मानवता के विरुद्ध हो रहे जुल्म एवं अत्याचारों को रोकने और उसके विरुद्ध आवाज उठाने, खड़े होने और संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया जाता है, भारत में मानवाधिकार बहुत विलंब से लागू हुए, 28 सितंबर 1993 को मानवाधिकार कानून बनाया गया जिसके आलोक में 12 अक्टूबर 1993 को सरकार ने राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग का गठन कर नागरिकों के हितों एवं अधिकारों की सुरक्षा हेतु पहल की.

मानवाधिकारों का वर्तमान वितान भले ही आकर्षक एवं चेतना युक्त दिखाई पड़ रहा हो पर मानव इतिहास क्रूरता, कुभाव, कलुषता, हिंसा, रुदन और अत्याचार से भरा हुआ है, इतिहास के पन्ने मनुष्य के रक्त से भीगे हुए हैं और शोषण की गाथाओं से भरे हुए भी, मानव जीवन की इस यात्रा में ऐसे हजारों चित्र अंकित हैं जहाँ मानवता शर्मसार होती दिखाई देती है, जहाँ मनुष्य द्वारा मनुष्य को एक जानवर की भांति उपयोग और उपभोग की वस्तु बना दिया गया हो, जहाँ वह वस्तु की भाँति बेचा और खरीदा गया हो, जहाँ उसकी साँसों के स्पंदन पर नियंत्रण उसके मालिक का रहा हो, समृद्ध वर्ग द्वारा निर्धनों के प्रति यह बरताव युगों-युगों से पूरी दुनिया में जारी रहा है, एशिया, अफ्रीका, अमेरिका एवं यूरोपीय देशों में अमानवीय दास प्रथा को उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है, जो सभ्यताएँ तलवार एवं छल-प्रलोभन के बल पर बढ़ीं वहां दास प्रथा को बढ़ावा और प्रश्रय मिला, युद्धबंदी, सामूहिक अपहरण और संगठित दास बाजार के उदाहरण इतिहास के पृष्ठों में दर्ज हैं, मनुष्य की स्वतंत्रता अमरीकी आजादी के संघर्ष का नारा ही था, भारत भी इस अमानवीय प्रथा से अलग नहीं रहा, बंधुआ मजदूरों के रूप में मानव का एक बड़ा वर्ग पीढ़ी दर पीढ़ी अमानवीय एवं अपमानजनक जीवन जीने को अभिशप्त रहा है, पर 1975 में एक कानून बनाकर बंधुआ मजदूरी को संज्ञेय दंडनीय अपराध घोषित कर देने से हजारों मनुष्यों को इस नारकीय जीवन ये मुक्ति मिली, विश्व में बाल मजदूरी को भी इसी पंक्ति में रखा जा सकता है, आज भी कम साक्षरता वाले राज्यों में अक्सर मानवाधिकार हनन की घटनाएँ जैसे पुलिस प्रताड़ना, झूठे केस में फँसाने एवं निर्दयता से मारने आदि प्रकाश में आती रहती हैं, इतना ही नहीं संपूर्ण विश्व में नारी गौरव, अस्मिता एवं अस्तित्व को हाशिए पर रखा गया है, महाभारत के द्रोपदी चीर हरण का दृश्य आँखों के सम्मुख बरबस आ जाना स्वाभाविक ही है.

आधुनिक युग पर दृष्टिपात करें तो कतिपय देशों की साम्राज्यवादी नीति ने लाखों निर्दोष मनुष्यों के लहू से वसुधा को रक्तरंजित किया है, प्रथम विश्व युद्ध से ही यह प्रश्न वैश्विक विचार फलक पर उभरने लगे कि एक मानव के रूप में उसके क्या अधिकार हैं, द्वितीय विश्व युद्ध में लाखों नागरिकों की हत्या से इन प्रश्नों की स्याही और गहरी हुई, भारत-पाकिस्तान के बँटवारे में धर्मांधता की आग में लाखों जीवन झुलस गए और नारी अस्मिता तार-तार हुई, पूरे विश्व में महिलाओं के श्रम का शोषण हुआ और कुछ देशों में महिलाएँ मतदान के अधिकार से वंचित भी रही हैं, इन तमाम संदर्भों के धरातल पर तब संयुक्त राष्ट्र संघ में मानवाधिकारों पर न केवल चर्चा-परिचर्चा करके एक रास्ता खोजने की पहल की गई बल्कि सर्वसम्मति से मानवाधिकारों का एक घोषणा पत्र भी जारी हुआ, इस वैश्विक घोषणा पत्र में प्रत्येक व्यक्ति को गरिमामय स्वतंत्र जीवन जीने की सुरक्षा का अधिकार मिला, मनुष्य की मनुष्य द्वारा की जा रही दासता से मुक्ति का उजास भरा पथ मिला, यातना, पीड़ा, क्रूरता से आजादी और एक मानव के रूप में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समानता का भी अधिकार प्राप्त हुआ, और यह भी किसी भी राज्य-सत्ता द्वारा किसी भी व्यक्ति की मनमाने ढँग से गिरफ्तारी करने, हिरासत में

रखने और देश से निर्वासन पर अंकुश लगाकर गैरकानूनी घोषित कर दिया गया, जब तक अदालत द्वारा आरोपी पर दोष सिद्ध न हो जाए तब तक उसे निर्दोष होने का अधिकार भी प्रदत्त है, घर, परिवार एवं पत्राचार में निजता की उपेक्षा कोई नहीं कर सकता, इसके साथ ही कोई भी व्यक्ति अपने देश के अंदर एवं अन्य किसी भी देश में भ्रमण करने, अपने देश की नागरिकता त्यागने एवं अन्य देश की नागरिकता ग्रहण करने और किसी भी देश में राजनीतिक शरण पाने का (गैर-राजनीतिक अपराध को छोड़कर) अधिकार रखता है, एक मनुष्य के रूप में वह धर्म, वर्ग, जाति, उपासना पद्धति से परे अपनी पसंद से किसी भी मनुष्य से शादी करने एवं परिवार बढ़ाने का अधिकार रखता है, वह अपनी समझ विकसित करने एवं कला-कौशल वृद्धि हेतु शिक्षा प्राप्त करने एवं साहित्य, संगीत, नृत्य आदि ललित कलाएँ सीखने-रचने का अधिकार रखते हुए वह सांस्कृतिक एवं बौद्धिक संपदा के संरक्षण का भी कानूनन अधिकारी है, स्त्री-पुरुष लैंगिक भेदभाव से मुक्त हो लोकतांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा बनकर समान रूप से विकास पथ पर अग्रसर हुए.

वास्तव में यह दुनिया एक सुंदर सुवासित उपवन है जिसमें मानव रूपी विविधवर्णी मनमोहक पुष्प शोभायमान हैं, इसका सौंदर्य एकात्मता में है अलगाव एवं विभेद में नहीं, शक्ति समुच्चय से ही समृद्धि के संकल्प की सिद्धि है और रिद्धि की प्राप्ति भी, मानवीय योग-क्षेम की कुशलता का आधार परस्पर सहकार, सख्य, सौम्यता, सामंजस्य, शुचिता एवं सहानुभूति हैं न कि अमैत्री, अशौच, विषमता, द्वेष एवं घृणा, परस्पर सहयोग से ही जीवन-घट आनंद रस से परिपूर्ण है, हम संपूर्ण दुनिया में आनंद रस वर्षण करें, अमिय स्नेह बाँटें जहां देश की संकीर्ण सीमाएं न हों और न हों रंग, नस्ल, पंथ की क्षुद्र बंधन, हम प्रीति-आत्मीयता का गुलाल मुट्ठियों में भर उड़ाते रहें जिससे हर मानव मन दैवीय संपदा से समृद्ध एवं सुगंधित हो और करुणा, ममता, समरसता, संवेदना एवं समताभाव से ओतप्रोत भी, हम अपनी वैचारिक साम्य संपदा से संपूर्ण विश्व को मानवीय गरिमा से आलोकित, अलंकृत एवं आभामय कर सकें, तभी इस दिवस को मनाने की सार्थकता सिद्ध होगी.

मान बढ़ाता छत्तीसगढ़ का शिमला

रचनाकार- कृष्ण कुमार ध्रुव"सृजन"

सूर्य किरण अब मद्धम हुई,
ठंड ने फैला दी है अपनी बाहें.
चहुँओर हिम की चादर फैली,
मौसम मानों भर रहा आहें..

ठिठुरन सा हो गया अब ये दिन,
झांक रहे अब ठंड को रजाई ओढ़.
सूर्य तपन को ग्रास लिया सर्द ने,
ओले के साथ ठंड पड़ी है मुंहतोड़..

भोर के भीनी-भीनी धूप पाकर,
तन-मन प्रफुल्लित हो जाय.
शबनम की बूंदे मोती सी बिखरे,
देख चंचल चित्त अद्भुत सुख पाय..

दूधिया चांदनी रात संग कोहरे लिए,
मानो अम्बर से गिरा है नीर.
सुनहरे सपने भी अब जम सा गया,
चुभन भरी हवा लगे शमशीर..

ठंड भी ठिठुर गई अब रात में,
मोजे- स्वेटर पहन तन ढके लोग,
उत्तम सेहत सर्द में है बनता,
भरपूर मजे से खाओ छप्पन भोग..

सर्द हवाओं की तीक्ष्ण धार,
बर्फ चादर से ढके दृश्य है विमला.
अद्भुत नजारे लिए गोद में,
मान बढ़ाते छत्तीसगढ़ का ये शिमला..

पहेलियाँ

रचनाकार- दिलकेश मधुकर

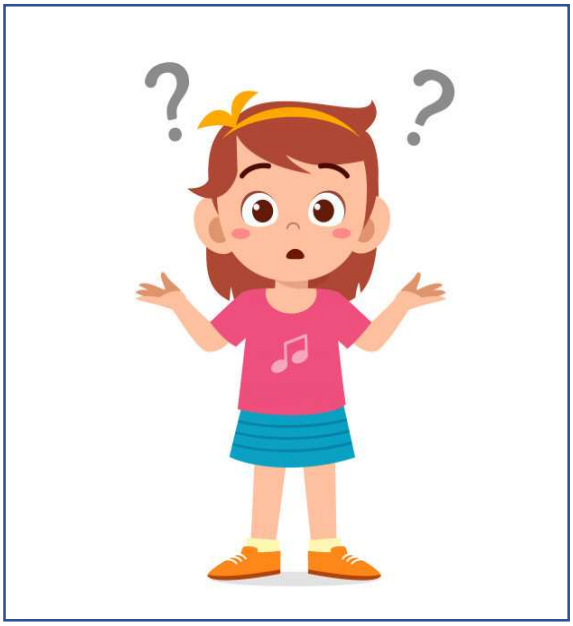

1.

मीठी जिसकी बोली, रंग है जिसकी काली.
कुहू-कुहू आवाज निकाले, है लगती निराली.

2.

रंग-बिरंगी पंखों वाली, मेघ देख नृत्य दिखाए
कृष्ण मुकुट में सजे, जल्दी कोई नाम बताए..

3.

लाल कलगी वाला, सुबह सबको जगाता.
घर आंगन में घूम-घूमकर, सबको भगाता.

4.

हरे रंग देह और, लाल रंग का चोंच.
खाकर मिर्च बोले, नकल बनाए सोच.

5.

कौए से जंग जीत लिया, ऐसी है जिसकी कहानी.
तनिक भी घमंड नहीं, करे अलग दूध और पानी.

6.

दिन को जो आराम करें, रात में करें सैर.

बच्चों को दूध पिलाए, लटके उल्टे पैर.

7.

नदी किनारे खड़ा रहे, मारे एकटक नैन.

जब तक मीन न पकड़े, न मिले उसे चैन.

8.

पितर का तर्पण खाए, बोले अपनी बात.

कांव-कांव करता रहे, काले रंग की जात.

9.

राजा के बाग में नहीं, पर राजकीय कहलाए.

मानुष बोली बोले, अपनी पहचान बतलाए..

10.

अंडा बिके बीच बाजार, दर्जन भर सौ पचास.

बन तंदूरी और कबाब, स्वाद लगे खासमखास..

उत्तर- 1.कोयल 2.मोर 3.मुर्गा 4.तोता 5.हंस 6.चमगादड़ 7.बगूला 8.कौआ 9.मैना 10.मुर्ग़ी

जिंदगी

रचनाकार- तबस्सुम

कभी चिलचिलाती धूप,
कभी सुहानी शाम जिंदगी.

कभी पतझड़-सी उदास
कभी खुशनुमा बहार जिंदगी.

कभी बेरंग सी होती,
कभी रंगो से सराबोर जिंदगी.

कभी दुखों का सैलाब,
कभी खुशियों की भरमार जिंदगी.

कभी संजीदगी से सराबोर,
कभी मस्ती से भरपूर जिंदगी.

कभी अमावस की काली रात,
कभी पूनम-सी खास जिंदगी.

कभी सागर-सी गहरी
कभी मीनार-सी ऊँची जिंदगी.

कभी नदी-सी चंचल,
कभी ताल-सी शांत जिंदगी.

कभी धोखा फरेब,
कभी सच बेहिसाब जिंदगी.

कभी टूटे सपनों का ढेर,
कभी ख्वाहिशें बेशुमार जिंदगी.

ड्यूटी

रचनाकार-टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला"

सेवानिवृत्त शिक्षक गौकरण सिंह नेताम अपने विभागीय कार्य के सिलसिले में डी ई ओ ऑफिस जा रहे थे, अड़तीस बरस तक शिक्षक के रूप में सेवारत रहे नेताम जी अंचल के एक नामी शिक्षक रहे, उनके शिक्षकीय कर्म का न केवल विभाग; बल्कि उस कार्यक्षेत्र पर भी गहरा असर रहा.

कोलतार की सड़क पर उनकी सामान्य स्पीड चलती बाइक को ट्रैफिक पुलिस के एक कांस्टेबल ने रोका और कागजात दिखाने के लिए कहा, नेताम जी हड़बड़ा गये, बाइक का इंश्योरेंस खत्म हो चुका था, आर सी बुक भी नहीं थी, ड्राइविंग लाइसेंस घर पर रह गया था, फिर उन्होंने जैसे ही हेलमेट उतारा, कांस्टेबल मुस्कुराया- ' ओह! नेताम सर आप! वर्षों बाद आपके दर्शन हुए सर! प्रणाम!'

अपने पैरों पर झुकते हुए उस जवान को नेताम जी नहीं पहचान पाये, वे अपने दिमाग पर जोर देते हुए उसे देखते रह गये, फिर कांस्टेबल ने मुस्कुराते हुए कहा- ' मैं सूरज हूँ सर, सूरज कुमार पटेल, आपने मुझे पढ़ाया है सर, जाँजगीर जिले के देवतराई ब्लॉक के मिडिल स्कूल सिवनी में, सन तिरानवे-चौरानवे में.'

' हाँ...हाँ..! मैं उन दिनों वहीं था, पर...',

'...पर कोई बात नहीं सर, नहीं पहचान पा रहे हैं तो, बहुत दिन भी हो गये.'

' तुम्हारे चेहरे से नहीं पहचान पा रहा हूँ, पर तुम्हारा नाम मुझे याद आ रहा है, ' नेताम जी ने कांस्टेबल से कहा.

' ओ के सर, कोई बात नहीं..., अच्छा, आदरणीय अब आप अपनी गाड़ी की कागजात दिखाइए.

' मेरे पास फिलहाल एक भी कागज नहीं है.' नेताम जी सकपकाये, उन्हें अच्छा नहीं लगा, बोले - ' इंश्योरेंस एक हफ्ते पहले ही खत्म हुआ है, लाइसेंस मेरी दूसरे शर्ट की जेब में हैं, घर से जल्दबाजी में निकल गया.'

' आदरणीय, आप एक सीनियर सिटिजन हैं, एक रिटायर्ड शिक्षक हैं, आपको ऐसे नहीं चलना चाहिए, आपको चालान कटवाना पड़ेगा.' कहते हुए कांस्टेबल ने चालान की कार्यवाही पूरी की; और अपनी ड्यूटी पर लग गया, नेताम जी ने भी अपनी राह पकड़ ली.

' रात्रि लगभग साढ़े-दस बजे नेताम जी का मोबाइल घनघनाया, ' सर जी, मैं सूरज कुमार पटेल, आपका चालान काटने वाला पुलिस कांस्टेबल, साॅरी सर, आपको अच्छा नहीं लगा होगा सर, पर मैं क्या करता, मैंने अपनी ड्यूटी पूरी की सर, माफ कीजिएगा, मैंने आपको हर्ट किया सर, आपको बहुत बुरा लगा होगा, उसकी वाणी में बड़ी विनम्रता थी, ' सर, मुझे आज भी याद है, आपने पढ़ाया था अर्जुन को कृष्ण का दिया उपदेश.., ' कहते हुए कांस्टेबल की जुबान ठिठक गयी.

' ओह! कोई बात नहीं बेटा, मुझे तुम पर बहुत गर्व है, बहुत अच्छा, तुमने अपना कर्तव्य पूरा किया, मैं तुमसे बहुत खुश हूँ, भगवान तुम्हें सदा खुश रखें, अपनी ड्यूटी करते रहो, बेटा, आज मुझे अपना शिक्षक होना सार्थक लगा.' शिक्षक नेताम जी के मुख से आशीष झर रहे थे.

सर्दी आई

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

सर्दी आई - सर्दी आई,
कोहरा, ठंड, कँपकँपी लायी,

सूरज भी अब देर से आता,
वह भी जाड़े से घबराता.
सेंकूँ धूप, बड़ी है चाहत,
गरमाहट देती है राहत..

कहीं न जाने का मन करता,
पड़ा रहूँ बस ओढ़ रजाई,
सर्दी आई - सर्दी आई,

भूले गर्मी के दिन पिछले,
स्वेटर, मफलर जैकेट निकले.
कोल्ड-ड्रिंक का मत लो नाम,
आइसक्रीम से हुआ जुकाम..

घर में माँग चाय - कॉफी की,
गर्म पकौड़ों की अगुवाई.
सर्दी आई - सर्दी आई..

कड़ी सजा है सुबह नहाना,
कोई चलता नहीं बहाना.
दाँत बज रहे कट - कट - कट,
पहनूँ कपड़े बस झटपट.

रेवड़ी, गजक, गोंद तिल लड्डू
मूँगफली, गुड़ पट्टी खायी.
सर्दी आई, सर्दी आई.

नए साल में

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

आओ बच्चो नाचें गाएँ नए साल में,
हर्षित मन सपने सजाएँ नए साल में.

बिना मतलब मन में चिंता क्यों पालें,
अच्छे-अच्छे भाव जगाएँ नए साल में,

झूठ-फरेब, राग - द्वेष को छोड़ें हम,
राह अपनी खुद बनाएँ नए साल में,

मिलजुल कर खुशियाँ बाँटें, प्रीत करें हम,
कुछ नया करके दिखाएँ हम नए साल में,

बीते साल परेशान हुए, क्यों कहते हो
नव उमंग, उल्लास जगाएँ नए साल में.

बेंदरा

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

कूदत - कूदत बेंदरा आथे
आधा फेंकथे, आला खाथे.

परे गोटानी नइ सुधरे ओ
उलटा मोला दाँत देखाथे.

जाथे ओ हर बारी - बखरी
तुम्मा, कोंहड़ा जम्मो खाथे.

नइ डर्रावय मनखे मन ल जी
कुकुर मन ल ओ गजब डर्राथे.

पछतावा

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

एक समय एक गाँव में बहुत बुद्धिमान राजा रहता था, गांव के सभी लोग राजा की प्रशंसा करते थे.राजा को जरा भी घमण्ड नही था.वह गरीबो को दान देते रहते थे, बच्चो से राजा बहुत अच्छा व्यवहार करते थे इसलिए बच्चे भी राजा से खुश रहते थे, राजा की कोई संतान नही थी, राजा को इस बात का दुख था कि मेरे जाने के बाद मेरा राज्य कौन सम्भालेगा.

बहुत दिनों बाद राजा का एक बेटा हुआ, राजा बहुत प्रसन्न हुये.राजा ने अपने बेटे का नाम वीर प्रताप रखा.गाँव और गाँव के आस पास के लोगो के लिए भोज का आयोजन किया, राजा का बेटा बड़ा हो गया लेकिन राजा के बेटे का व्यवहार राजा के बिल्कुल विपरीत था.राजा वीर प्रताप को खूब पढ़ाना- लखाना चाहते थे लेकिन वीर प्रताप का पढ़ने में बिल्कुल मन नहीं लगता था..उसको बुरी लत लग चुकी थी, उसको घमण्ड था कि मेरे पिता जी के बाद मै राजा बनूँगा.राजा ने अपने बेटे को बहुत समझाया कि पढ़ लिख के आगे बढ़ और बुरी आदतें छोड़ दे लेकिन वीरप्रताप नही माना.एक दिन अचानक वीर गिर पड़ा.आँखों के आगे अंधेरा छा गया.राजा उसे तुरन्त चिकित्सक के पास ले गए, पता चला कि वीर को गंभीर बीमारी हो गई है.राजा बहुत दुखी हुये.वीर को जब पता चला कि उसका जीवन अब ज्यादा नही बचा है उसके बाद वीर बहुत रोने लगा.और पछताने लगा कि मैं यदि समय के रहते पिता जी का बात मान लेता तो ऐसा नही होता.

नए साल में

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

आओ बच्चो, नए साल में
पौधे नए लगाएँ
आसपास के पर्यावरण को
मिलकर सुखद बनाएँ.

फूल, फल और छाँव मिलेगी
खुशबूदार हवाएँ
इन पेड़ों से लाभ बहुत है
औरों को बतलाएँ.

रोज बढ़ रहा है यहाँ प्रदूषण
यह भी तो हम जानें
आओ, हम सब संकल्प करें
पर्यावरण बचाने.

हम ही वृक्ष को काटेंगे तो
धरा बच न पाएगी
अपने पाँव मार कुल्हाड़ी
जनता पछताएगी.

अपलम चपलम

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह नीहार, नईदिल्ली

एक थे बाबू अपलम चपलम,
अकबक टकबक करते हरदम.
बात के नींबू खूब निचोड़े,
पल-पल अपनी मूँछ मरोड़े.

सबसे करते टोका-टाकी,
बात बची ना कोई बाकी.
अपना रुतबा खूब दिखाते,
सदा अकड़ते धौंस जमाते.

कुछ बच्चों ने सलाह मिलाई,
अपलम चपलम है दुखदाई.
इनको सबक सिखाना होगा,
दर्पण ज़रा दिखाना होगा.

जाकर पूछे कई सवाल,
अपलम चपलम हाल-बेहाल.
किसकी मौसी कानी कुतिया,
आसमान में कितनी नदियाँ?

अपलम चपलम कान खुजायें,
उत्तर एक न उनको आये.
बोलो-बोलो अपलम चाचा,
मुँह को खोलो चपलम चाचा.

ऊँट के मुहँ में पड़ी नकेल,
अपलम चपलम हो गए फेल..

नया इतिहास बनाओ

रचनाकार- अनिता चंद्राकर

ज़ुनून का तेल डाल कर, आग की लपटें उठा.
बन मशाल अपने दम पर, तू घने तम को मिटा.

अपने भीतर की उस, प्रसुप्त शक्ति को जगा.
चैतन्य से अपने आलस, अकर्मठता को दूर भगा.

दबी हुई चिंगारी को, धधकती हुई ज्वाला बना.
ला परिवर्तन तू भी, एक नया इतिहास बना.

कर हर पल का सदुपयोग, फैला दे ज़हाँ में प्रकाश.
सुकर्मों की ख़ुशबू से, बन ऊँचा हो जैसे आकाश.

सत्यवादिता

रचनाकार- श्वेता तिवारी

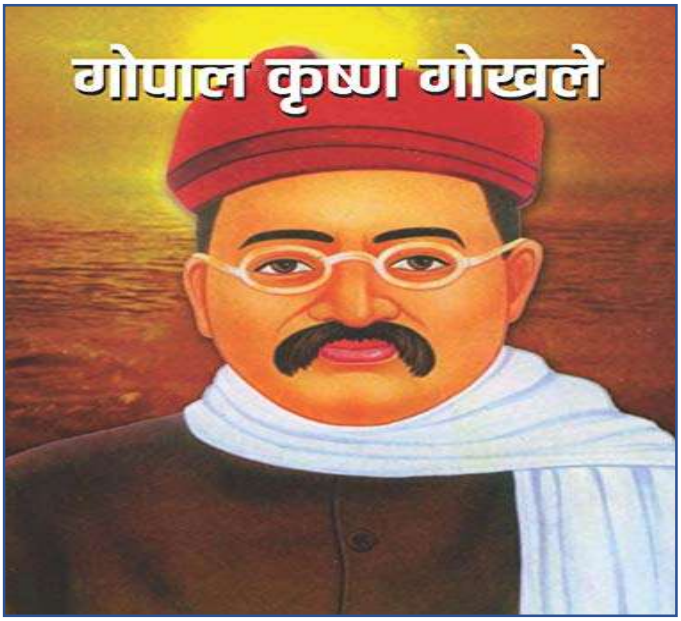

"पूत के पांव पालने में दिखाई दे जाते हैं" कि बचपन के कुछ घटनाएं सबके लिए प्रेरणा स्रोत बन जाती हैं.

एक बार गणित के अध्यापक ने अपनी कक्षा में श्यामपट्ट पर एक प्रश्न लिखा और बच्चों को हल करने को कहा सभी बालक गुरु जी की आज्ञा का पालन करते हुए इस प्रश्न को हल करने में जुट गए.थोड़ी देर में गुरु जी ने विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिका को देखना शुरु किया, सभी बालकों के उत्तर गलत थे तभी उनकी दृष्टि कोने में बैठे छोटे से बालक की कॉपी पर पड़ी, तो देखकर उनकी आंखों में चमक आ गई, गुरु जी प्रसन्न होकर बोले शाबाश गोपाल तुम्हारा उत्तर बिल्कुल सही है, उन्होंने गोपाल की पीठ थपथपाई.गोपाल ने पूरी कक्षा में धाक जमा ली, गुरुजी ने कुछ सवाल बालकों को घर से हल करके लाने को दिए, गोपाल ने घर आकर उन प्रश्नों को हल करना शुरू किया, उसने सभी प्रश्न हल कर लिए किंतु, एक प्रश्न बहुत कठिन था.गोपाल ने एड़ी चोटी का जोर लगाया परंतु हल नहीं हुआ, हार कर बालक ने अपने बड़े भाई की सहायता से प्रश्न हल कर लिया.अगले दिन अध्यापक जी ने सभी विद्यार्थियों की अभ्यास पुस्तिकाएं एकत्रित की पूरी कक्षा में गोपाल ही ऐसा विद्यार्थी था जिससे सारे उत्तरसही थे, गोपाल इधर आओ गुरु जी ने कहा, मुझे प्रसन्नता है कि तुम्हारे सारे उत्तर सही है लो, मैं तुम्हें यह कलम पुरस्कार में देता हूं.गोपाल ने पुरस्कार का नाम सुना उसकी आंखों में आंसू आ गए.इस पर गुरुजी को आश्चर्य हुआ उन्होंने पूछा बेटा इसमें रोने की क्या बात है, क्षमा करें गुरुजी गोपाल ने हाथ जोड़कर विनम्र भाव से कहा, मैं पुरस्कार का अधिकारी नहीं हूं, पर क्यों गुरु जी ने

विस्मित होकर पूछा तुम्हारे सारे उत्तर सही है.गुरु जी आप समझ रहे होंगे कि यह सभी प्रश्न मैंने स्वयं हल किए हैं, पर यह सत्य नहीं है, एक प्रश्न मेरी समझ में नहीं आ रहा था मैंने उसे अपने बड़े भाई की सहायता से हल किया है.अब आप ही निर्णय कीजिए कि मुझे पुरस्कार मिलना चाहिए, या दंड.बालक की सत्यवादिता एवं निर्भीकता को देखकर गुरुजी बहुत प्रसन्न हुए.उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि एक छोटा सा बालक इतनी निर्भीकता से सत्य बोलने का साहस कर सकता है.वह बोले बेटा पहले मैं तुम्हें यह कलम सभी सवालों को सही हल करने के लिए दे रहा था, पर अब मैं उसे तुम्हारी ईमानदारी के लिए देता हूं.बालक ने गुरुजी से पुरस्कार प्राप्त किया, यह बालक बड़ा होकर गोपाल कृष्ण गोखले के नाम से प्रसिद्ध हुआ, गोपाल कृष्ण गोखले जिन्हें महात्मा गांधी अपना राजनीतिक गुरु मानते थे.

लाल टमाटर

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

लाल टमाटर, लाल टमाटर
ले आओ जी लाल टमाटर.

धनिया मिर्च के सँग मिलाओ
स्वादिष्ट चटनी तुम बनाओ.

इसके क्या-क्या फायदे भाई
तरकारी है कि है दवाई.

आँखों की रोशनी बढ़ाते
मुख पर ये सुंदरता लाते.

रक्त परिसंचरण को बढ़ाते
कोलेस्ट्रॉल को सदा घटाते.

खनिज, विटामिनों का भंडार
प्रकृति का है अनुपम उपहार.

औषधि गुण से भरे टमाटर
चलो करें हम इनका आदर.

नवा बछर

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

नवा बछर आगे.
सबो डहर छागे.

उत्ती लाल बरन.
दिखय सोन किरन.

धीरे-धीरे हवा चलय.
रुखराई घलो डोलय.

फूल अबड़ महकय.
कोइली अबड़ कुहकय.

खुसी घरोघर छागे.
नवा बछर आगे.

मामा चंदा

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

पास हमारे आना मम्मी
हमको जरा बताना मम्मी.

रोज रात में मामा चंदा
खुले बदन ही घूमता बंदा.

जाड़ा इसको नहीं सताता
इसीलिए तो रात में आता.

स्वेटर-शाल दिला दो मम्मी
या काॅफी पीला दो मम्मी.

सुबह-सुबह सूरज आएगा
धूप गुनगुनी दे जाएगा.

गरम-गरम खिला दो मम्मी
या अलाव जला दो मम्मी.

सफलता की कहानी- व्यवहार में परिवर्तन

बालिका का नाम- गुंजन (परिवर्तित नाम)

संस्था का नाम- कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय बिलाईगढ़, बलौदा बाज़ार

कक्षा - सातवीं

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय बिलाईगढ़ में कक्षा सातवीं की बालिका गुंजन, जिनका कहना है कि भेदभाव रहित समाज ही सबको आगे बढ़ने में मदद करेगा.

गुंजन का कहना है कि पहले उसे पता नहीं था कि अगर कोई बात हमें अच्छी नहीं लग रही है तो उसे कैसे कहा जाये, गुंजन ने कहा "मेरी माँ पहले मेरे साथ बहुत भेदभाव पूर्वक व्यवहार करती थी, मेरे दोनों भाइयों को ज्यादा प्यार देती थी और मुझे कम, मेरे भाइयों के लिए नए-नए कपड़े खरीदती थी पर मेरे लिए बहुत ही कम, यह सब देखकर मुझे बहुत दुःख होता था और मैं बहुत रोती थी.

जब गुंजन अधीक्षिका द्वारा अगस्त माह 2019 में आयोजित कक्षा सातवीं के जीवन कौशल सत्र "लिंग भूमिकाएँ और रूढ़ीवादी सोच" में शामिल हुयी तब उसे इस बात की जानकारी मिली कि जो उसके साथ घर पर परिवार वाले व्यवहार करते हैं वो भी तो भेदभाव ही है, फिर गुंजन ने सोचा कि मैं यह बात घर पर कहूँगी, जब छुट्टियों में वह अपने घर गयी तो उसने अपनी मम्मी पापा को बताया कि हमारे स्कूल में जीवन कौशल की शिक्षा दी जाती है, जिसमें यह बताया गया है कि माता-पिता को अपने बच्चों के साथ किसी भी तरह का भेदभाव नहीं करना चाहिए, तो आप लोग भी मेरे साथ इस तरह का भेदभाव पूर्वक व्यवहार मत किया कीजिये, मुझे यह बिलकुल अच्छा नहीं लगता और मैं बहुत रोती हूँ, इस तरह कई बार समझाने के बाद मेरे मम्मी पापा को भी अहसास हुआ कि वो मेरे साथ गलत व्यवहार कर रहे थे, अब मेरे मम्मी पापा दोनों मुझसे बहुत प्यार करते हैं और मेरे लिए नए कपड़े भी लाते हैं.

इस पूरी घटना की जानकारी गुंजन ने अपने अधीक्षिका एवं शिक्षिका को दी और कहा कि मैडम मेरे जीवन में यह बदलाव जीवन कौशल की शिक्षा के कारण हुआ है, अब मैं बहुत खुश हूँ.

गुंजन का कहना है कि- अभिभावकों को अपने बच्चों के साथ भेदभाव नहीं करना चाहिए जो कार्य लड़के कर सकते हैं वो कार्य लड़कियां भी कर सकती हैं और पैसों के कारण कभी भी पढ़ाई नहीं छोड़नी चाहिए.

पोखर में हरा सिंघाड़ा

रचनाकार- प्रमोद दीक्षित मलय

ताल तलैया में भरा सिंघाड़ा.
पोखर में तैरे हरा सिंघाड़ा.

कोई खाता है गुड़ से, कोई-
तीखी चटनी से खरा सिंघाड़ा..

तीन नुकीले काँटे हैं इसमें.
कभी न पशुओं ने चरा सिंघाड़ा..

गाँव, शहर, चौराहों में बिकता.
ठेले पर उबला धरा सिंघाड़ा..

आटे से पूआ-पूड़ी बन जातीं.
उपवासों में प्रिय रहा सिंघाड़ा..

कच्चा ताजा जाड़ों में मिलता.
हर दम पानी में फरा सिंघाड़ा..

चले शीतलहर, कुहासा, पाला.
तब पोखर में ही मरा सिंघाड़ा..

जानी मानी मूली

रचनाकार- व्यग्र पाण्डे, सवाई माधोपुर

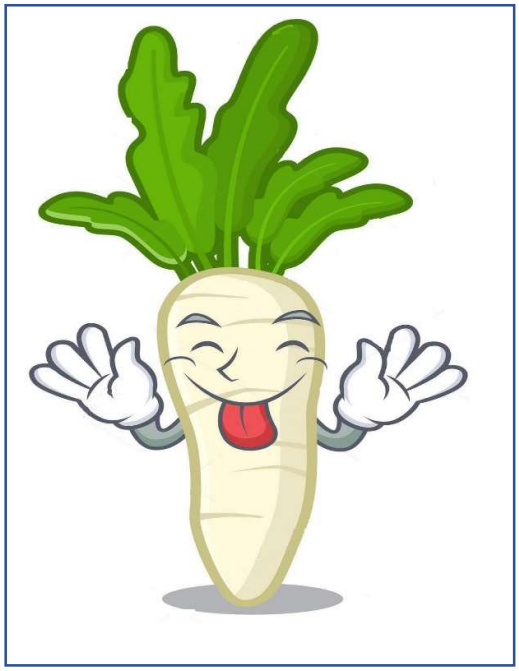

सबकी जानी-मानी मूली,
सब्जियों की रानी मूली.

रखती ताज पत्तों का सिर,
है रोगों की हैरानी मूली.

सर्द ऋतु में आती मूली,
हर इंसान को भाती मूली.

देख-देख सुंदरता अपनी,
सब पर रोब जमाती मूली.

औषधि-गुण जिसमें भरपूर,
हिचकी, खुजली करती दूर.

मूली का रस दृष्टि बढ़ाये,
श्वाँस रोग में भी काम आये.

मूली बिन सब्जियाँ विरानी,
पाचनकारी लगे सुहानी.

सत्ता जिसकी सबने कबूली,
कभी धन्नो कभी लगती जूली.

शरद ऋतु

रचनाकार- डॉ, अखिलेश शर्मा, इंदौर

वर्षा ऋतु अब भागी सरपट
शरद ऋतु आई है झटपट,
झींगुर, दादुर शांत हो गए
मोर, पपीहे क्लांत हो गए.

नदी-नालों का मान घटा है,
आसमान से ध्यान हटा है.
काले बादल भाग चुके हैं,
छाते को सब त्याग चुके हैं.

नम त्वचा अब सूख रही है,
ठंड पता अब पूछ रही है.
निकले स्वेटर, कोट, रजाई
ऋतु ठंड है सबको भाई.

घर

रचनाकार- जयन्त कुमार पाठक

रामपुर नाम का एक गाँव था, वहाँ के लोग बहुत ही मेहनती थे, आपस में मिलजुलकर रहते थे, गाँव से सटा हुआ घनघोर जंगल था, वहाँ बहुत से जानवर रहते थे, मनुष्य व जानवर सुखपूर्वक रहते थे.मनुष्यों ने अपने स्वार्थ व लालच के लिए जंगल काटना, जंगल में आग लगाना शुरू कर दिया, जंगल काटकर, खाली जमीन पर कब्जा कर खेती करने लगे, जंगल की अधाधुंध कटाई से जंगल धीरे-धीरे कम और वीरान होने लगा, गाँव के आदमी जंगली जानवरों का शिकार भी करने लगे, लगातार जंगल काटने व जानवरों का शिकार करने से जीव-जंतुओं के लिए समस्या बढ़ने लगी, जानवरों ने बैठक की और चर्चा की, कि यदि मनुष्य इसी तरह जंगल काटते व शिकार करते रहे, तो हमारे घर खत्म हो जाएँगे, हम कहाँ रहेंगे? जंगल के राजा ने कहा कि हम भी मनुष्य, उनके घरों व फसलों को नुकसान पहुँचाएंगे, उसके बाद सभी जानवर अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार मनुष्यों की फसलों व घरों को नुकसान पहुँचाने लगे, मनुष्य जंगलों को और जानवरों को नुकसान पहुँचाते एवं जानवर मनुष्यों का, जो आज तक जारी है.

तितली

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

नए साल को नव रंगों से,
खूब सजाने आई तितली.

बगिया के नव फूलों पे,
प्रीत लुटाने आई तितली.

नए साल की देख बहारें,
मन-ही-मन हरसाई तितली.

नए साल में लगे हैं मेले,
देख-देख मुस्काई तितली.

मेले में थे चाट चटपटे,
खुशबू से ललचाई तितली.

देख तमाशे नए साल के,
खुशियों से इठलाई तितली.

फूला केला

रचनाकार- अरविंद कुमार 'साहू'

फूला देखो खूब ठठाकर,
फूल बड़ा अलबेला,
ऐसा फूला लटके-लटके,
वहाँ लग गया मेला.

बाहर से इकलौता पर
भीतर से नहीं अकेला,
लाल पंखुडे झड़े तो निकला,
दाँत चियारे केला.

केला भी दो- चार नहीं,
एक- एक दर्जन का मेला,
एक फूल फूलने से,
केलों से भर गया ठेला.

किसान की कहानी

रचनाकार- सोमेश देवांगन

धूप तो खिली नहीं बरस रहा है पानी,
मैं हूँ किसान और यही मेरी कहानी.,

मेरी फसल पड़ी हुई है मेरे खेत में,
पानी गिर रहा हैं अब इतने देर में..

मेहनत कर के फसल को है उगाया.
तेज आँधी-तूफ़ानों से इसको है बचाया..

फसल को अपने हाथों में मैंने जब पाया.
बिन मौसम ये बरसात पानी ले के आया..

धूप तो खिली नहीं बरस रहा है पानी.
मैं हूँ किसान और यही है मेरी कहानी..

भूल का एहसास

रचनाकार- अनिता चंद्राकर

गाँव के सरकारी स्कूल में सोनू, कक्षा आठवी का छात्र था.वह सीधा-सादा और होनहार छात्र था, उसके स्कूल की ख्याति दूर दूर तक थी, कारण था वहाँ के प्रतिभावान बच्चों की उपलब्धि और स्कूल का अनुशासन, स्कूल में गणित विषय के नए शिक्षक 'दत्ता सर' आये, दत्ता सर ऊँचे- पूरे आकर्षक व्यक्तित्व के थे, पहले ही दिन जब वे सोनू की कक्षा में गए तो उनको देखते ही सभी बच्चे अपनी जगह पर खड़े हो गए, सम्मान पाकर दत्ता सर के चेहरे पर मुस्कान ख़िल गई, पर तभी उनकी नज़र सोनू पर पड़ी जो अभी भी बैठा हुआ था, दत्ता सर क्रोध से तिलमिला उठे, गुस्से में वे सोनू के क़रीब गए, सोनू फिर भी नहीं उठा, "तेरी इतनी हिम्मत, शिक्षक के सामने भी बैठा है, तू खड़ा नहीं हो सकता क्या ?" दत्ता सर ने कहा.

सोनू कोई सफाई दे पाता उससे पहले ही दत्ता सर ने 'आव देखा न ताव', और छड़ी उठाकर सोनू को पीटना शुरू कर दिया, पूरी कक्षा में डर के मारे सन्नाटा छा गया, तभी एक बच्चे ने घबराते हुए कहा, " सर जी सोनू खड़ा नहीं हो सकता." दत्ता सर ने पूछा, " क्यों ? क्या उसके पैर टूट गए हैं ?" सर वह बचपन से ही खड़ा नहीं हो सकता, वह दिव्यांग है." उस बच्चे ने कहा, अब दत्ता सर ने सोनू की ओर देखा, सोनू की आँखों से अश्रु की अविरल धारा बह रही थी, सोनू के पैरों की ओर नज़र डाली तब दत्ता सर को अपनी ग़लती का अहसास हुआ.उनका हृदय द्रवित हो उठा, वे ख़ुद को रोक नहीं पा रहे थे.दत्ता सर की आँखों से भी आँसू बह निकले.वे सोनू को गले लगाकर रोने लगे.उसकी हथेलियों को चूमा और सोनू के आँसू पोछते हुए कहा, " बेटा मुझे माफ़ कर दो, मुझसे बहुत बड़ी भूल हुई है आज."

" नहीं सरजी ! इसमें आपकी कोई गलती नहीं है "सोनू ने कहा, और दोनों फ़फ़क फ़फ़क कर रोने लगे, छुट्टी के बाद दत्ता सर सोनू के घर गए और उसके पालकों से मिलकर माफी माँगी, सोनू के पिताजी ने कहा, " गुरुजी आप लोग माली की तरह है, आपकी देखरेख में ही हमारे बच्चे फूलों की तरह महकते हैं और अच्छे इंसान बनते हैं.आप लोग माता पिता से भी बढ़कर है, " यह बात सुनकर दत्ता सर को चैन मिला, उस दिन से उनके भीतर अभूतपूर्व परिवर्तन आया, वे उस विद्यालय के सबसे प्रिय शिक्षक बन गए.

मोबाइल

रचनाकार- सपना यदु

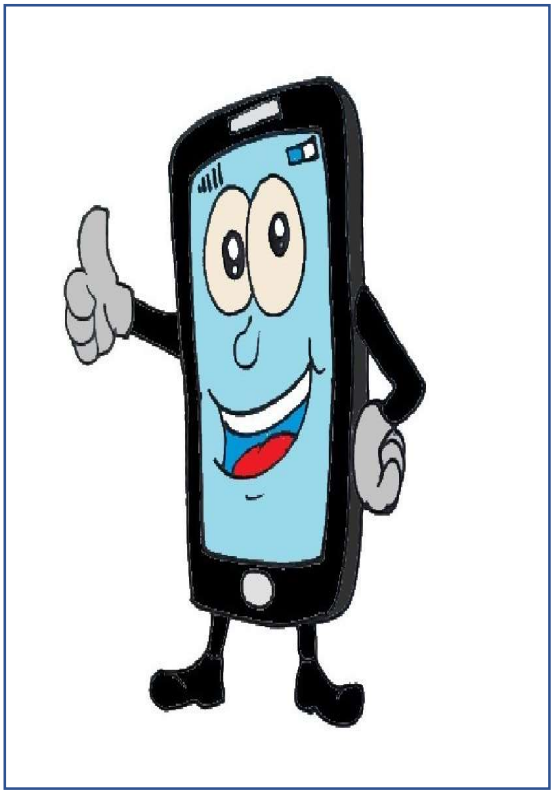

आया मोबाइल आया,
ढेरों खुशियां लाया.
बच्चे बूढ़े हो या जवान,
सबके मन को यह भाया..

गाना, फोटो, वीडियो, टॉर्च,
सब को अपने साथ लाया.

मामा, मौसी, नाना, नानी,
बात करते हम सभी से.
बात हो जाती है सबकी,
चाहे रहे कोई देश-विदेश में..

केलकुलेटर है चलाते,
देखो मेरे अमित भैया.
सारे अंकगणित बनाते,
पल में सब सुलझाते..

अगर बिजली चली जाती,
झट से इसका टॉर्च जलाते.
एक पल में ही देखो भैया,
झट से अंधियारा दूर भगाते..

बच्चे इसमें गेम खेलें,
बनते एक दूजे के गुरु और चेले.
जैसे ही बिजली चली जाती,
चार्जिंग में झट ले आते..

इससे है सभी इंसान को,
मिल जाते हैं अनेकों ज्ञान.
गूगल पर जाकर देखो भैया,
होता सब समस्या का समाधान..

कोरोना महामारी के इस भीषण काल में,
बच्चे स्कूल नहीं है जाते.
पर ऑनलाइन क्लास से देखो,
पढ़ाई अपनी पूरी कर पाते..

इसके बिना सभी इंसान,
अपने को है अधूरा पाते.
चाहे कहीं भी जाए,
इसको कभी ना छोड़ पाते..

पर एक चिंता है मुझे सताती,
मोबाइल सबको इतनी भाती.
खो गए हैं सब मोबाइल में इतने,
एक दूजे से हो गये दूर कितने.,

एक दूजे से कभी ना मिल पाते,
सच्चे मित्र थे जो कहलाते.
फेसबुक की दुनिया में हो गुम,
अनजानो को है ये फ्रेंड बनाते..

टॉर्च, केलकुलेटर और टेप रिकॉर्डर,
कैमरा भी हो गए सन्न.
मोबाइल में ही सब पाकर,
हो गए हैं इसी में सब गुम..

उलटे लटके पंखे जी

रचनाकार- अरविंद कुमार साहू, रायबरेली

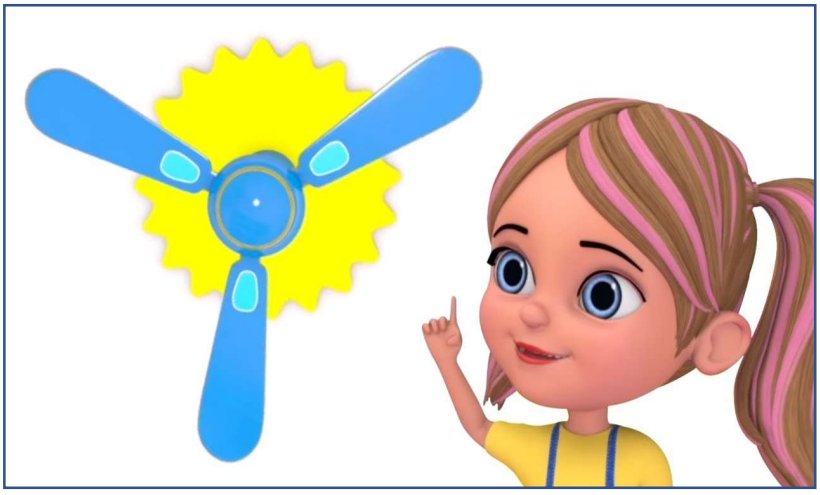

हवा से हरदम बातें करते, कभी न थकते पंखे जी
सर - सर करके चलते रहते, उलटे लटके पंखे जी

सिर पर पैरों को रख करके, खूब भागते पंखे जी
बिजली से सुर ताल मिलाकर, खूब नाचते पंखे जी

गर्मी में हम नींद में होते, किन्तु जागते पंखे जी
हरदम ताजी हवा खिलाकर, प्यार जताते पंखे जी

बिजली जाने पर थोड़ा-थोड़ा, सुस्ताते पंखे जी
जाडे में कुछ छुट्टी लेकर, खुद सो जाते पंखे जी

श्रीनिवास रामानुजन: गणित का दैदीप्यमान नक्षत्र

रचनाकार- प्रमोद दीक्षित मलय

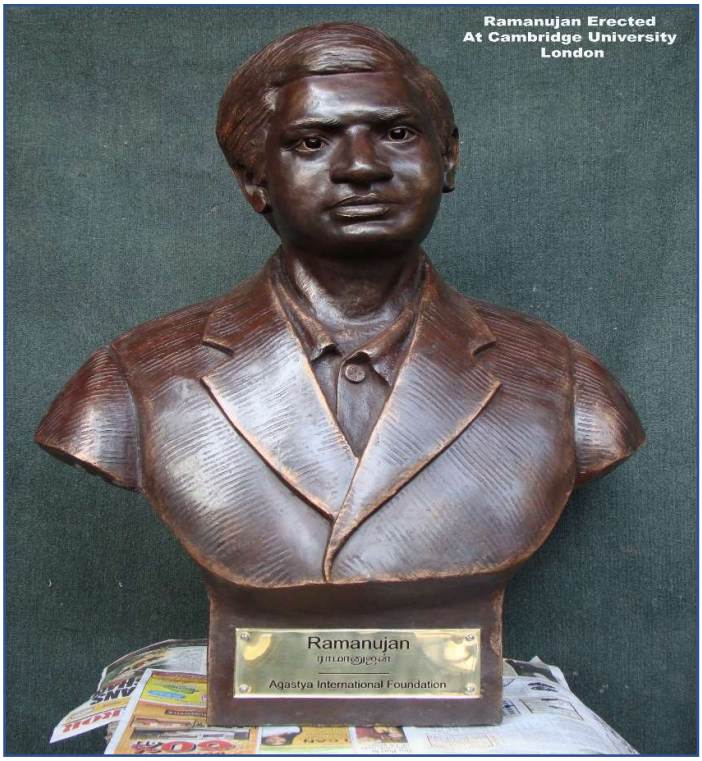

लेख का आरम्भ आज से 125 साल पहले एक गांव के विद्यालय की कक्षा तीन की गणित की बेला के एक दृश्य से करता हूं, शिक्षक बच्चों से बातचीत करते हुए कहते हैं कि, तीन केले यदि तीन लोगों में या एक हजार केलों को एक हजार लोगों में बराबर बांटा जाये तो प्रत्येक को एक-एक केला मिलेगा, अर्थात् किसी दी हुई संख्या में उसी संख्या से भाग देने पर भागफल एक आता है, तभी एक बच्चे ने सवाल किया कि, क्या शून्य को शून्य से भाग देने पर भी भागफल एक आयेगा, कक्षा में मौन पसर गया, इस बालक ने कक्षा पांचवीं में पूरे जिले में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर अपने माता-पिता और विद्यालय को गौरवान्वित किया, इतना ही नहीं, कक्षा सातवीं में पढ़ते हुए कक्षा बारहवीं और बी.ए, के बच्चों को गणित पढ़ाया करता था, आगे चलकर यही बालक विश्व का महान गणितज्ञ सिद्ध हुआ.जिसे सभी श्रीनिवास रामानुजन आयंगर के नाम से जानते हैं, और जिनके प्रमेय आधारित सूत्र गणितज्ञों के लिए आज भी रहस्य एवं अबूझ पहेली बने हुए हैं और शोधकार्य का आधार भी, जिनके नाम पर रामानुजन अभाज्य, रामानुजन स्थिरांक सिद्धांत विश्व विश्रुत हैं, वास्तव में रामानुजन गणित की दुनिया के प्रखर भास्कर थे जिनके ज्ञान, मेधा और अंक शास्त्र की समझ से विश्व चमत्कृत है, वह गणितीय कर्म कौशल के फलक का कोहिनूर माणिक्य हैं, गणित के आकाश का दैदीप्यमान

नक्षत्र हैं जिनकी आभा से गणित-पथ प्रकाशित है, जिनके महनीय अवदान से गणित-कोश समृद्ध, समुन्नत और सुवासित हुआ है.

रामानुजन का जीवन-पथ कंटकाकीर्ण था, तमाम अभावों और दुश्वारियों से जूझते हुए वह गणित के शोधकार्य में मृत्युपर्यन्त साधनारत रहे, अंतिम घड़ी तक रोगशैय्या पर पेट के बल लेटे औंधे मुंह वह गणित के सूत्र रचते रहे, रामानुजन का जन्म तमिलनाडु के एक निर्धन ब्राह्मण परिवार में पिता श्रीनिवास के कुल में माता कोमलतम्म्ल की कोख से 22 दिसम्बर 1887 को इरोड में हुआ था, पिता एक दुकान में मुनीम अर्थात खाता-बही लेखन का काम करते थे, एक वर्ष बाद पिता परिवार के साथ कुंभकोणम आ गये, मजेदार बात यह कि बालक तीन वर्ष तक कुछ बोला ही नहीं, सभी समझे कि वह गूंगा है, पर आगे वाणी प्रस्फुटित हुई तो परिवार में खुशी छाई, रामानुजन का बचपन कुंभकोणम में बीता और यहीं पर ही प्राथमिक शिक्षा भी पूरी हुई, आगे की शिक्षा के लिए टाउन हाईस्कूल में प्रवेश लिया, यहां पढ़ने का बेहतर वातावरण मिला, स्थूलकाय रामानुजन की आंखों में नया सीखने की उत्कट उत्कंठा की चमक थी, स्कूल के पुस्तकालय में त्रिकोणमिति आधारित सूत्रों की एक पुस्तक मिली, बालक रामानुजन उन सूत्रों को हल करने में जुटे रहते, न प्यास की चिंता न भोजन का ध्यान, सूत्रों को हल करने की ललक से रामानुजन गणितीय संक्रियाओं को समझने और हल करने में पारंगत हो गये, वह अंकों से खेलने लगे, उनके गुण-धर्मों पर सोचने लगे, पर इसके कारण अन्य विषयों के अध्ययन के लिए समय न बचता, फलतः उनमें पिछड़ते गये, लेकिन हाईस्कूल उत्तीर्ण कर लिया और गणित एवं अंग्रेजी में अधिक अंक प्राप्त करने के कारण आगे के अध्ययन के लिए सुब्रमण्यम छात्रवृत्ति मिली और कालेज में 11वीं कक्षा में दाखिला ले लिया, पर गणित में सर्वोच्च अंक लाकर अन्य विषयों में अनुत्तीर्ण हो गये, छात्रवृत्ति बंद हो गई और कालेज छूट गया, परिवार की आर्थिक स्थिति डांवाडोल और जरूरतें मुंह बाये खड़ी थीं, गणित का ट्यूशन शुरू किया तो पांच रुपये महीना मिलने लगे, 1907 में बारहवीं की परीक्षा में व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में बैठे पर फिर अनुत्तीर्ण हो गये, हालांकि गणित में पूरे अंक प्राप्त किये, परिणाम यह हुआ कि कालेज हमेशा के लिए छुट गया.

अगले पांच वर्ष जीवन की कड़ी परीक्षा का काल था, पढ़ाई छूट चुकी थी, कोई काम-धंधा था नहीं, गणित में काम करने का असीम उत्साह तरंगें मार रहा था पर किसी विद्वान शिक्षक-प्रोफेसर का साथ न था, ऐसे विकट संकटकाल में एक भाव था, जो रामानुजन को अनवरत ऊर्जा प्रदान कर रहा था.और वह था ईश्वर के प्रति दृढ आस्था और विश्वास, कुलदेवी नामगिरि के प्रति अनंत असीम श्रद्धा और समर्पण भाव उनके हृदय को ज्योतित किए हुए था, जिसका उल्लेख रामानुजन ने प्रो, हार्डी के साथ बातचीत में करते हुए कहा था, कि गणित में शोध भी मेरे लिए ईश्वर की ही खोज है, इसी दौरान 1909 में पिता ने 12 वर्षीय कन्या जानकी से रामानुजन का विवाह करवा दिया, अब पारिवारिक जिम्मेदारियां बढ़ गईं तो आजीविका की तलाश में मद्रास(अब चैन्नै) की राह पकड़ी, पर 12वीं अनुत्तीर्ण युवक को नौकरी पर कौन रखता,

जैसे-तैसे एक साल गुजरा, स्वास्थ्य भी गिरने लगा तो कुंभकोणम लौटना पड़ा, एक साल बाद फिर मद्रास लौटे, पर अबकी बार अपने गणित के शोधकार्य का रजिस्टर साथ लाये और रजिस्टर दिखाकर काम मांगने लगे, संयोग से एक शुभचिंतक ने रजिस्टर देखा तो रामानुजन को डिप्टी कलेक्टर से मिलने की सलाह दी, डिप्टी कलेक्टर वी रामास्वामी अय्यर स्वयं गणित के विद्वान थे, वह रामानुजन के काम से प्रभावित हुए और जिलाधिकारी रामचंद्र राव से अनुशंसा कर 25 रुपये मासिक मानधन का प्रबंध करवा दिया, इससे रामानुजन को आर्थिक झंझावात से आंशिक मुक्ति मिली और वे शोधकार्य में अधिक ध्यान देने लगे, इसी अवधि में वह इंडियन मैथमेटिक्स सोसायटी में काम करते हुए उसके जर्नल के लिए प्रश्न बनाने और हल करने का काम भी करने लगे थे, इसी जर्नल में आपका पहला शोध-पत्र 'बरनौली संख्याओं का गुण' प्रकाशित हुआ जिसकी चतुर्दिक भूरि-भूरि प्रशंसा हुई, आगे मद्रास पोर्ट ट्रस्ट में क्लर्क के पद पर काम करने लगे, यह समयावधि रामानुजन के शोध के लिए उपयुक्त थी, रात भर स्लेट पर सूत्र बनाते, हल करते, फिर रजिस्टर पर उतारते और थोड़े आराम के बाद कार्यालय निकल जाते, अब एक गणितज्ञ के रूप में पहचान बनने लगी थी, मित्र की सलाह पर अपने काम को इंग्लैंड के गणितज्ञों के पास भेजा पर कोई महत्व न मिला, संयोग से 8 फरवरी 1913 को एक पत्र प्रो, जी.एच, हार्डीको भेजते हुए उनके एक अनुत्तरित प्रश्न को हल करने के सूत्र खोजने का संदर्भ देकर अपने कुछ प्रमेय भी भेजे, पहले तो हार्डी ने पत्र पर ध्यान न दिया पर अपने शिष्य लिटिलवुड से परामर्श कर रामानुजन के काम की गम्भीरता समझी और रामानुजन को मद्रास विश्वविद्यालय से छात्रवृति दिला कालांतर में शोध हेतु अपने पास लंदन बुलवा लिया, दोनों साथ शोधकार्य करते रहे, यहां रामानुजन के कई शोध-पत्र प्रकाशित हुए, ऐसे ही एक विशेष शोधकार्य पर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने बी.ए, की उपाधि प्रदान की, लेकिन वहां की जलवायु, रहन-सहन, खान-पान और सामाजिक व्यवहार से शर्मीले, संकोची, आत्मनिष्ठ शाकाहारी रामानुजन तादात्म्य न बैठा सके, स्वयं भोजन पकाने और शोधकार्य के अत्यधिक मानसिक श्रम से शरीर क्षीण होने लगा, चिकित्सकों ने क्षय रोग बता आराम करने की सलाह दी, पर रामानुजन पर काम की धुन सवार थी, इसी काल में आपको रॉयल सोसायटी का फेलो चुना गया, आज तक सबसे कम उम्र में फेलो चुने जाने वाले वह पहले व्यक्ति थे.और पहले अश्वेत भी, ट्रिनिटी कालेज से फेलोशिप पाने वाले पहले भारतीय बने, रोग बढ़ने के कारण आप जन्मभूमि भारत लौट आये, मद्रास विश्वविद्यालय में प्रोफेसर नियुक्त हुए, पर स्वास्थ्य तेजी से गिरने लगा, रोग शैय्या पर लेटे-लेटे ही आप काम करते, कालपाश रामानुजन के प्राणों की ओर बढ़ रहा था, 26 अप्रैल 1920 को गणित का यह जगमगाता दीप अपना प्रकाश समेट अनंत की यात्रा पर निकल गया.

रामानुजन का काम आज भी गणितज्ञों की परीक्षा ले रहा है, ट्रिनिटी कालेज के पुस्तकालय में 1976 में रामानुजन का हस्तलिखित 100 पन्नों का रजिस्टर मिला था.जिसमें उनकी प्रमेय और सूत्र लिखे हैं, जिसे टाटा फंडामेंटल रिसर्च सेंटर ने रामानुजन नोटबुक नाम से प्रकाशित किया

है, उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक फिल्म 'द मैन हू न्यू इन्फिनिटी' भी बन चुकी है, भारत सरकार ने 1912 में 125वीं जयंती के अवसर पर रामानुजन पर डाक टिकट जारी करते हुए उनके जन्मदिन 22 दिसम्बर को गणित दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की, गूगल ने डूडल बनाकर अपना श्रद्धा भाव अर्पित किया, जब तक गणित है तब तक उनकी खोज 'रामानुजन संख्याएं' (1729, 4104, 39312 आदि), थीटा फलन और संख्या सिद्धांत पर उनका विशेष काम विद्यार्थियों को प्रेरित करता रहेगा, रामानुजन हमेशा गणित के पृष्ठों पर विद्यमान रहेंगे.

आओ हम पेड़ लगाएं

रचनाकार- अजय कुमार यादव

कितने सुंदर कितने प्यारे,
लगते हैं ये कितने न्यारे,
रहते हरदम चुपचाप खड़े,
एक दूसरे से मानो गले मिले,

आओ हरियाली मनाएं
आओ हम पेड़ लगाएं....

चिड़ियों का संगीत सुनो,
अपने मन को धीर धरो,
पेड़ों से तुम भी प्रीत करो,
पेड़ों से आती बरसात निराली,
मिट्टी की भीनी खुशबू,

मन को हमारे बहकाये,
आओ हम पेड़ लगाएं....

जल जीवन और धरा है उपवन,
पेड़ ही तो धरती का तन मन.
काम की बात सबको बताओ
पेड़ ना काटो मान भी जाओ

ये सब का जीवन बचाएं
आओ हम पेड़ लगाएं....

पेड़ों की है बात निराली,
करनी है इनकी रखवाली,
हम मनाएंगे ईद और दीवाली.
ऋषियों ने पेड़ों के गुण बताए,
आओ हम वन महोत्सव मनाए,
आओ हम पेड़ लगाएं.....

माँ

रचनाकार- नंदिनी राजपूत

माँ होती है सबसे प्यारी,
सबसे प्यारी, सबसे न्यारी,
सुबह से लेकर शाम तलक
निभाती है हर जिम्मेदारी,

रोज सुबह जल्दी उठ जाती,
काम करके वह थक जाती.
शिकन नहीं चेहरे पर आती
खुश होकर सारे गम छुपाती,

रोज मुझे स्कूल पहुँचाती,
छुट्टी होने पर घर भी लाती.
घर के सारे काम समेट कर,
होमवर्क भी खुद करवाती,

दोस्त बनकर साथ निभाती,
बहन बनकर प्यार लुटाती,
पापा बनकर ज्ञान सिखाती,
हर रिश्ते को बखूबी निभाती.

संभल जा बंदे

रचनाकार- ऋषि गर्ग, ग्वालियर

बातों में ऋतुएं बीती,
काम करेगा कब तू अंधे.
ना होश है ना जोश है,
संभलेगा तू कब तक बंदे..

सुन्दर आशियानों के
ख्वाब रखने वाले.
खुद करे ना मेहनत,
क्यों अपना काम टाले..

परिंदों की सवारी होती नहीं
हवाओं में प्यारे.
बनाना पड़ेगा जहाज पूरा
तब खुलेंगे किस्मत के ताले..

कर्म करो तो फल मिलेगा,
मनन करो तो हल मिलेगा.
हर काम आसान लगेगा,
तू अगर अपना कर्म करेगा..

सोच मत ज्यादा कर तू काम,
तब होगा तेरा सम्मान.
तू भविष्य है माँ-बाप का,
खुद के देश की मिसाल का

तो ना बिता दे ऋतुएं बातों में
ख्वाबों में और रातों में
बना खुदकी पहचान तू
बनजा लाखो में एक इन्सान तू.

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी -

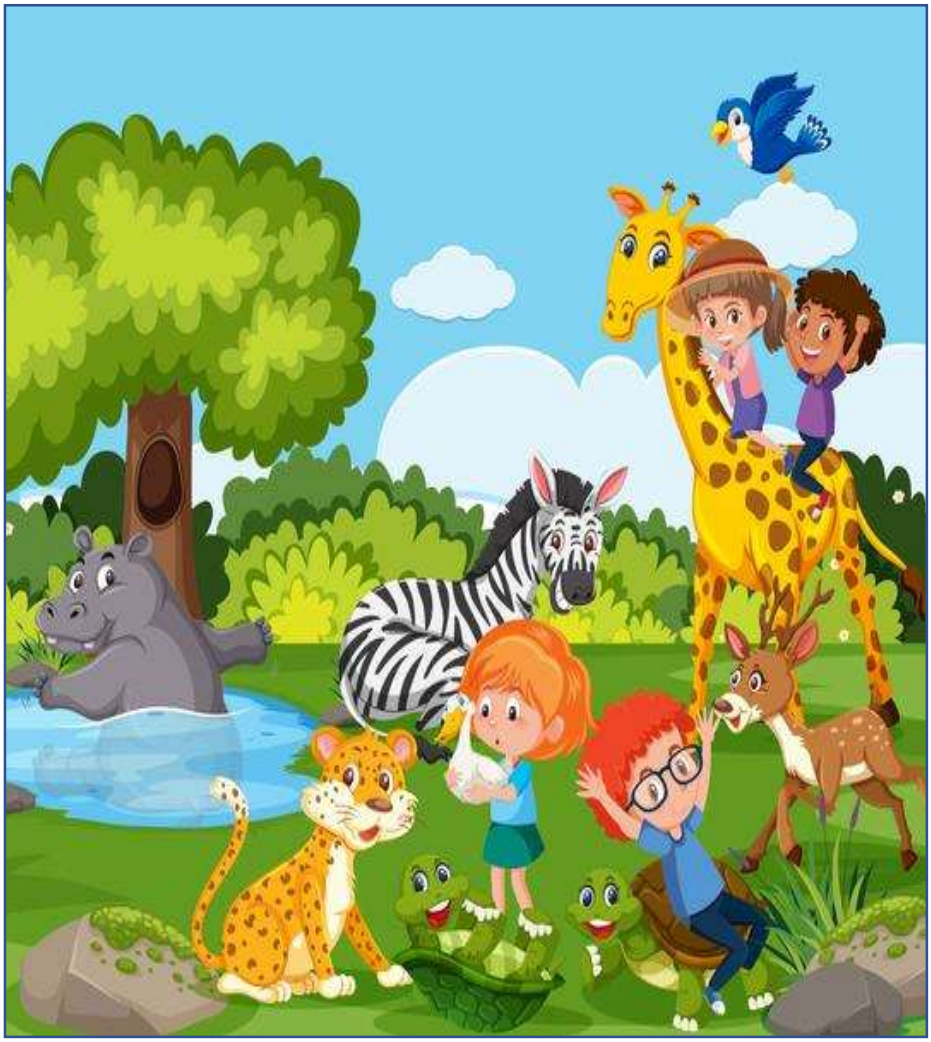

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

शैक्षिक भ्रमण

बच्चे बहुत खुश थे क्योंकि शिक्षक उन्हें शैक्षिक भ्रमण हेतु शहर के उद्यान ले गए थे, उस उद्यान में कई प्रकार के जीव जंतु, पशु-पक्षी जैसे- कछुआ मेंढक, मछलियाँ, विभिन्न प्रकार की चिड़ियाँ, शेर, भालू, हिरण, जेब्रा, जिराफ आदि थे.

शिक्षक ने सभी बच्चों को उद्यान के जीव-जंतु एवं पेड़-पौधों को बिना क्षति पहुँचाए, सुरक्षित रहते हुए अपने-अपने समूह में घूमने की अनुमति दे दी, साथ ही उद्यान में जीव-जंतु, पशु-पक्षी, पेड़-पौधों आदि के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने को कहा, साथ ही यह भी कहा कि भोजन के पश्चात हम सभी एकत्र होकर बैठेंगे और तब सब लोग समूह वार अपने-अपने अनुभवों के बारे में बताएँगे.

सभी बच्चे अपने-अपने समूह में अपनी रुचि के अनुसार घूमने लगे, मौज मस्ती करते रहे.साथ ही शिक्षक के दिए गए कार्यों को भी ध्यान में रखते हुए उद्यान का आनंद लेते रहे.

दोपहर के भोजन के बाद बच्चों की सभा हुई जिसमें गीत, कविता, एवं उद्यान से संबंधित समूहवार सभी ने अपने अनुभव प्रस्तुत किए.तत्पश्चात शाम ढलने के पहले सभी उद्यान से वापस लौट आए, यह दिन बच्चों के लिए कभी न भूलने वाला यादगार दिन बन गया था.

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा भेजी गई कहानी

एक गाँव में बच्चे पढ़ते लिखते और खेलते हुए आनंदित रहते थे, एक दिन बच्चों ने सोचा कि क्यों ना हम सब इस बार अवकाश में पास के जंगल में भ्रमण के लिए जाएँ और पूरे दिन जानवरों के साथ आनंदपूर्वक बिताएँ, एक बच्चा बोला, मैं तो बंदर के संग नाचूँगा, दूसरा बच्चा बोला मैं कछुए की पीठ पर बैठकर सैर करूँगा.एक और बच्चे ने कहा मैं अपनी बहन के साथ जिराफ की सवारी करूँगा, वाह कितनी लंबी गर्दन होगी और बहुत ऊँचा भी होगा न जिराफ, मजा आ जाएगा, जिराफ की पीठ से मैं ज्यादा दूर तक देख सकूँगा, एक बच्ची ने कहा मैं प्यारी बत्तख से मिलूँगी, उसके साथ बतियाउँगी एक बच्चा बोला वाह कितना मजा आएगा जब हमारे साथ जिराफ बाघ साँप भालू जिराफ जैसे जंगल के जानवरों की टोली होगी.एक बच्चे ने फिर कहा हाँ -हाँ वहाँ शहद खाने वाले और मधुमक्खी से बचने पानी में डुबकी लगाने वाले काले भालू भी होंगे न? तब तो सचमुच मजा आएगा, एक बच्चे ने कहा मुझे जंगल का शांत स्वच्छ पक्षियों की चहचहाट युक्त सुगन्धित वातावरण और हरियाली खूब आनंदित करती है, इस तरह वार्तालाप के बाद बच्चों की जंगल सैर करने की योजना बन गई, रविवार को उन्होंने जंगल की सैर की, उन्हें बहुत मजा आया यह भ्रमण सबके लिए यादगार रहा.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल**kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें, आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

ठंड

रचनाकार- महेंद्र देवांगन "माटी"

मौसम हुआ अजीब, कहाँ से बादल आये.
कभी धूप तो छाँव, कभी पानी बरसाये..

बैठे बैठे लोग, ठंड से थरथर काँपे.
ओढ़े स्वेटर शॉल, अँगीठी को भी तापे..

लकड़ी रोज लाते हम, ठंड को रोज भगाते हम.
"माटी" कहना मान के, ठंड भगाओ जान के..

मोबाइल से पढ़ाई

रचनाकार- सोमेश देवांगन

मोबाइल से हो रहा पढ़ाई.
इसपे था पहले बहुत कड़ाई..

घर में देखो हो रहा है लड़ाई.
मोबाइल से हो रहा पढ़ाई.,

सुबह उठते ही दिखे मोबाइल,
हाथ में आते ही करे स्माइल.,

ऑनलाइन में करते हैं सवाल,
समझ न आये तो करें बवाल..

आँखों में इसका हो रहा असर,
मोबाइल खेल कर पूरी करें कसर..

अब भी जारी है कोरोना का कहर.
फैला रहा अभी वायरस का जहर..

भाखा जनऊला

भाखा जनऊला (छत्तीसगढी वर्ग पहेली)

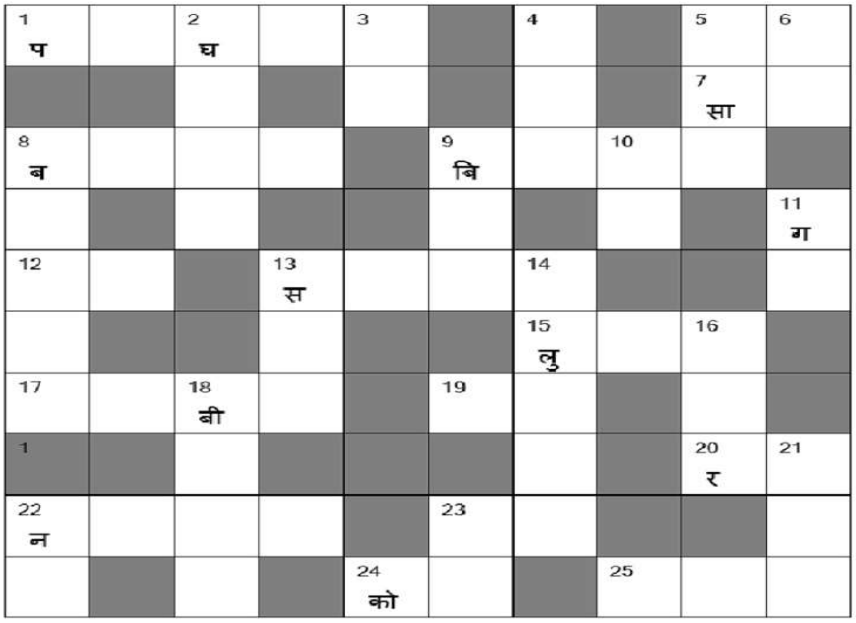

बाएँ से दाएँ:- बारातियों का स्वागत कार्यक्रम 5. बील 7. सब्जी 8. बाराती 9. चिढ़ाना 12. रास्ता 13. लगातार 15. परंपरागत साड़ी 17. बिलबिलाना, झुंड मे रेंगना/चलना (कीड़े इत्यादि का) 19. अहाता 20. रुको 22. नातिन 23. क्या 24. बाड़ी 25. भिगाया

ऊपर से नीचे:- 2. घराती 3. शुद्ध 4. जरूरत 5. खरीदा 6. रिश्ता 8. पतंगा 9. फिसलन 10. पका 11. भारी 13. आसमान, स्वर्ग 14. गलघोंट, गलघोंटू, गलाघोंटू 16. राहल 18. सवेरा 21. हिलता हुआ 22. नया 23. किसे, किसको

पिछले भाखा जनऊला के उत्तर